सफल जीवन
के
सैद्धांतिक नियम
मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

सफ़ल जीवन
के
सैद्धांतिक नियम

लेखक

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

अनुवादक

मोहम्मद ख़ादिम

संपादक

मोहम्मद आरिफ़

Goodword

विषय-सूची

दो शब्द

तरक़्क़ी का राज़ हमेशा साधारण नियमों में होता है, लेकिन इंसान अक्सर तरक़्क़ी को ऐसी चीज़ समझ लेता है, जो किसी बहुत बड़ी चीज़ के ज़रिये हासिल होती हो। आप चंद मीठे बोल से, अपने हाथ-पाँव की मेहनत से, अपने सीमित संसाधनों को इस्तेमाल करने से और एक काम को लगातार पकड़े रहने से कामयाबी की ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं। हालाँकि इनमें से कोई चीज़ नहीं, जो बहुत बड़ी हो और एक आम आदमी उसे कर न कर सकता हो। यही वह हक़ीक़त है, जिसे एक मुहावरे के रूप में इस तरह कहा गया है—

‘साधारण गुणों से ही असाधारण इंसान बनते हैं!’

इस किताब में ऐसे ही कुछ साधारण, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण नियमों का इस्लामी शिक्षा की रोशनी में वर्णन किया गया है।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

ज्ञान का महत्व

पैग़ंबरे-इस्लाम[*] हज़रत मुहम्मद 570 ई. में अरब के शहर मक्का में पैदा हुए। 610 ई. में जब आपकी आयु 40 वर्ष हो गई तो आपको ईश्वर ने अपना पैग़ंबर चुना। ईश्वर की ओर से पहली वह्यी[**] जो आपको प्राप्त हुई, वह यह थी— "पढ़ अपने रब के नाम से जिसने तुम्हें पैदा किया। इंसान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया। पढ़ कि तुम्हारा रब कृपालु है। उसने क़लम से ज्ञान सिखाया।"

(क़ुरआन, 96:1-4)

हक़ीक़त यह है कि ज्ञान सारी इंसानी तरक़्क़ियों की शुरुआत है। इंसान को ईश्वर ने एक हैवान के रूप में पैदा किया है, लेकिन इंसान को एक विशेष फैकल्टी (faculty) भी प्रदान की गई है और वह उसका दिमाग़ है। इंसानी दिमाग़ में असीमित असाधारण योग्यता प्रदान की गई है। इस योग्यता को जगाने के लिए ज्ञान की ज़रूरत है। ज्ञान की मदद से ही दिमाग़ तरक़्क़ी करता है और बढ़ते-बढ़ते उच्च स्तर तक पहुँच जाता है।

ज्ञान के ज़रिये आदमी इतिहास को जानता है। वह प्रकृति के रहस्यों की खोज करता है, वह चीज़ों की प्रत्यक्ष सतह से गुज़रकर उनकी हक़ीक़त तक पहुँच जाता है। ज्ञान की यह अहमियत एक इंसान के लिए भी उतनी ही ज़रूरी है, जितनी कि दूसरे इंसान के लिए।

ज्ञान प्राप्त करो

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान मर्द और हर मुसलमान औरत का फ़र्ज़ है।" इस हदीस[***] से इस्लाम में ज्ञान की अहमियत

---

[*] ईशदूत; ईश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्ति, जिसने ईश्वर का संदेश लोगों तक पहुँचाया।

[**] ईश्वर का संदेश, जो पैग़ंबर को सीधे जिब्रील नाम के फ़रिश्ते से मिलता था।

[***] हज़रत मुहम्मद की कही हुई बातें।

का पता चलता है। ईश्वर की पहचान ज्ञान के बिना नहीं हो सकती, इसलिए ज्ञान प्राप्त करने को अनिवार्य किया गया है। ज्ञान इंसान की समझ को बढ़ाता है। ज्ञान से इंसान के ज़हन की खिड़कियाँ खुलती हैं। ज्ञान से सोच का दायरा बढ़ता है। ज्ञान के द्वारा इंसान इस योग्य हो जाता है कि वह ज़्यादा गहरी हक़ीक़तों को समझ सके, वह दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाकर अपना बौद्धिक विकास (intellectual development) कर सके।

धार्मिक व आध्यात्मिक विकास के लिए ज्ञान बहुत ज़रूरी है। ज्ञान के द्वारा ज़हन में स्थिरता (stability) आती है। ज्ञान के द्वारा वैचारिक विकास की प्रक्रिया जारी होती है। ज्ञान के बिना आदमी न तो पवित्र पुस्तकों को पढ़ सकता है और न ही इतिहास व सृष्टि के बारे में ज़्यादा जानकारी हासिल कर सकता है। ज्ञान आदमी को पशुता के स्तर से उठाकर इंसान के स्तर पर पहुँचा देता है।

सीखने का स्वभाव

दूसरे ख़लीफ़ा उमर फ़ारूक़ के बारे में कहा जाता है कि वे हर मिलने वाले से कुछ-न-कुछ सीखते थे। दूसरे शब्दों में यह कि उनके अंदर सीखने की प्रक्रिया (learning process) हमेशा जारी रहती थी।

ऐसा क्योंकर होता है? वह इस तरह होता है कि आदमी जब भी किसी से मिले तो खुले ज़हन (open mind) के साथ मिले। वह उसको सिखाने से ज़्यादा उससे सीखने की कोशिश करे। सीखने की इस प्रक्रिया को लाभदायक रूप से जारी रखने के लिए ज़रूरी है कि आदमी पक्षपाती सोच (biased thinking) से पवित्र हो, वह बड़ाई की भावना में न जीता हो। उसकी मानसिकता यह हो कि जो कुछ मुझे मिलेगा, उसे तुरंत ले लूँगा। जब भी मुझे मेरी किसी ग़लती के बारे में बताया जाएगा तो मैं तुरंत उसे स्वीकार करके ख़ुद को सही कर लूँगा।

सीखने की प्रक्रिया को लाभदायक बनाने में अगर सिखाने वाले का किरदार अहम है तो उससे भी ज़्यादा महत्व उसमें सीखने वाले के किरदार का है। सीखने वाले में जितना ज़्यादा सही स्वभाव होगा, उतना ही ज़्यादा वह दूसरों से लेने में सफल रहेगा। संसार में हर क्षण ज्ञान व ईश्वर की अनुभूति की बारिश

हो रही है। शर्त केवल यह है कि आदमी के पास उसको लेने के लिए बरतन मौजूद हो।

ज्ञान का भंडार

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "समझदारी मोमिन* की खोई हुई दौलत है, जहाँ वह इसे पाए तो वह उसी की है।" यह हदीस ज्ञान की श्रेष्ठता को बताती है। इसका मतलब यह है कि ज्ञान चाहे कहीं भी हो और किसी के भी पास हो, वह समान रूप से सारी इंसानियत का हिस्सा है।

ज्ञान एक साझा भंडार है। ज्ञान पर किसी का एकाधिकार नहीं, ज्ञान हर तरह के भेदभाव से ऊपर है। ज्ञान सूरज की तरह है, जिससे रोशनी हासिल करने का अधिकार जितना किसी एक को है, उतना ही अधिकार दूसरे को भी है।

ज्ञान के मामले में यह विश्वव्यापी (global) अवधारणा बहुत ज़रूरी है। इस अवधारणा के बिना ज्ञान की वृद्धि संभव नहीं। ज्ञान का भंडार इतना ज़्यादा फैला हुआ है कि चाहे उसका कितना ही ज़्यादा इस्तेमाल किया जाए, उसमें कोई कमी नहीं आती। ज्ञान एक ऐसा अथाह सागर है, जो हर चाहने वाले की प्यास बुझाता है, लेकिन उसका अपना भंडार उसके बाद भी उतना ही ज़्यादा बचा रहता है, जितना कि वह उससे पहले था।

ज्ञान की प्राप्ति

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ज्ञान प्राप्त करो, चाहे वह चीन में हो।" इससे पता चलता है कि ज्ञान की प्राप्ति में किसी भी तरह के पक्षपात या किसी भी तरह के कारण को बाधा नहीं बनाना चाहिए। पुराने ज़माने में चीन का सफ़र एक बड़ा मुश्किल सफ़र समझा जाता था, इसलिए यह कहना कि ज्ञान प्राप्त करो, चाहे वह चीन में हो, इसका मतलब यह है कि हर परेशानी को सहन करके ज्ञान प्राप्त

---

* सच्ची निष्ठा से ईश्वर के आदेशों का पालन करने वाला ईश्वरभक्त।

करो। किसी भी चीज़ को इस मामले में बाधा न समझो, ज्ञान के बिना इंसान मानो कच्चा लोहा है। यह ज्ञान है, जो इंसान को स्टील बनाता है। ज़िंदगी के साधारण पहलू को इंसान ज्ञान के बिना समझ सकता है, लेकिन ज़िंदगी की गहराई तक पहुँचना ज्ञान के बिना संभव नहीं है।

इस हदीस से यह पता चलता है कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए सफ़र करना ज़रूरी है। सफ़र के बिना ज्ञान में कोई बड़ी वृद्धि नहीं हो सकती। सफ़र इंसान के बौद्धिक क्षितिज को बढ़ाता है। सफ़र इंसान को स्थानीय ज्ञान से उठाकर विश्वव्यापी ज्ञान तक पहुँचा देता है।

ज्ञान का उपहार

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "कोई पिता अपनी संतान को इससे अच्छा उपहार नहीं दे सकता कि वह उसे शिक्षा दे। दूसरा कोई भी उपहार हमेशा वक़्ती (temporary) होता है, लेकिन ज्ञान का उपहार एक ऐसी चीज़ है, जो कभी समाप्त नहीं होता।

हर आदमी की पहली पाठशाला उसका अपना घर है। इस पाठशाला के गुरु स्वयं माता-पिता होते हैं। इस हदीस से एक ही समय में दो बातें पता चलती हैं— एक यह कि माता-पिता को सबसे पहले ख़ुद शिक्षित होना चाहिए, क्योंकि अगर माता-पिता शिक्षित न हों तो वे न तो शिक्षा की अहमियत को समझ पाएँगे और न ही अपनी संतान को शिक्षित करने में उचित रूप से अपना योगदान दे सकेंगे। दूसरी बात यह है कि घर किसी बच्चे के लिए केवल पालन-पोषण की ही जगह नहीं है, बल्कि वह उसकी शिक्षा-दीक्षा की भी जगह है। हर घर को शिक्षा-दीक्षा का एक संस्थान होना चाहिए। उसके बिना वह घर एक अपूर्ण घर है, न कि संपूर्ण अर्थों में घर।

ज्ञान की श्रेष्ठता

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "शहीद के ख़ून की तुलना में विद्वान की क़लम

की स्याही ज़्यादा श्रेष्ठ है।" इस हदीस से पता चलता है कि ज्ञान की महानता अन्य सभी चीज़ों से ज़्यादा है।

इसका कारण यह है कि ज्ञान का संबंध बुद्धि से है। ज्ञान से बुद्धि को सेहत मिलती है, बौद्धिक सोच में वृद्धि होती है, ज्ञान से यह संभव होता है कि बुद्धि मामलों को ज़्यादा उचित रूप से समझे और ज़्यादा उचित रूप से काम की योजनाबंदी (planning) करने के योग्य हो जाए।

कोई भी शारीरिक काम एक सीमित काम है। एक हद तक पहुँचकर शारीरिक काम की सीमा आ जाती है, लेकिन ज्ञान का मामला इससे अलग है। जिस आदमी को ज्ञान प्राप्त हो, उसका व्यक्तित्व (personality) अत्यंत विशाल हो जाएगा। वह हर बंधन से बाहर आकर सोचने के योग्य हो जाएगा। वह एक ऐसा इंसान बन जाएगा, जिसे कोई हरा न सके। जिस तरह ज्ञान की कोई सीमा नहीं, उसी तरह इंसान की भी कोई सीमा नहीं, जो ज्ञान की पूँजी का स्वामी हो जाए।

ज्ञान का रिकॉर्ड

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ज्ञान को लिखकर सुरक्षित करो।" इसका मतलब यह है कि जो ज्ञान तुम्हारे ज़हन में है, उसे काग़ज़ पर लिख लो। इस तरह वह अपने सही रूप में हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाएगा।

इस शिक्षा का एक प्रयोग यह है कि ज्ञान को पुस्तकों में स्थानांतरित किया जाए। हर ज्ञानात्मक विषय पर पुस्तकें लिखकर तैयार की जाएँ। ज्ञान को मस्तिष्क से निकालकर पुस्तकालय के रूप में इकट्ठा कर लिया जाए।

इस मामले का एक रूप वह भी है, जिसको डायरी कहा जाता है। इस तरह इस शिक्षा की एक पैरवी यह भी होगी कि हर आदमी अपनी एक डायरी रखे। वह अपने प्रतिदिन के अध्ययन और अनुभव को संक्षिप्त रूप में तारीख़ के साथ दर्ज करता रहे। इस तरह हर आदमी की ज्ञानात्मक यात्रा की एक डायरी तैयार होती रहेगी।

यह डायरी आदमी की रोज़ाना की बौद्धिक यात्रा का एक रिकॉर्ड होगी,

वह अपने आत्मनिरीक्षण (introspection) का एक असरदार ज़रिया होगी। आदमी अपनी डायरी के ज़रिये अपनी सफ़लता और असफलता को जानकर अपना सुधार करता रहेगा। इस तरह डायरी उसके व्यक्तित्व के विकास का ज़रिया बन जाएगी।

ज्ञान के माध्यम से ज्ञान

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ज्ञान को माँ की गोद से लेकर क़ब्र तक प्राप्त करो।" इससे यह पता चला कि ज्ञान किसी वक़्ती लाभ या किसी वक़्ती काम के लिए नहीं होता, बल्कि वह एक हमेशा जारी रहने वाली प्रक्रिया है, जो इंसान के जन्म से लेकर उसकी मौत तक जारी रहती है। अत: ज्ञान अपने आपमें वांछनीय (desired) है। ज्ञान का वास्तविक उद्देश्य इंसानी व्यक्तित्व का निर्माण है। यह कोई वक़्तीकाम नहीं, यह एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। वह हर स्थिति में और हर स्थान पर जारी रहती है। इंसानी व्यक्तित्व का निर्माण कभी पूरा नहीं होता, इसलिए उसकी शिक्षा-दीक्षा की प्रक्रिया भी कभी समाप्त नहीं होती।

ज्ञान या शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ज़हन को जगाना है, ताकि वह एक चीज़ और दूसरी चीज़ के अंतर को समझे। वह कभी सीमित सोच में लिप्त न हो। उसकी बुद्धि कभी ठहराव (stagnation) का शिकार न होने पाए। ज्ञान इंसानी व्यक्तित्व का आहार है और अधूरा व्यक्तित्व वर्तमान संसार में कोई बड़ी भूमिका नहीं निभा सकता।

अलाभकारी ज्ञान

हज़रत मुहम्मद की एक दुआ यह थी— "ऐ ईश्वर ! मुझे ऐसे ज्ञान से बचा, जिससे कोई फ़ायदा न हो।" इसका मतलब यह हुआ कि वही ज्ञान, ज्ञान है जो इंसानियत के लिए फ़ायदेमंद हो। जो ज्ञान इंसानियत के लिए फ़ायदेमंद न हो, वह कोई वांछित ज्ञान नहीं। ऐसे ज्ञान की प्राप्ति में अपना समय लगाना, जिसमें

कोई वास्तविक लाभ न हो, समय को बरबाद करना है।

प्रगतिशील व्यक्तित्व

क़ुरआन में सच्चे इंसान का उदाहरण पौधे के रूप में दिया गया है। जिस तरह पौधा बढ़कर पेड़ बनता है, उसी तरह इंसान का व्यक्तित्व भी बढ़ता रहता है। यहाँ तक कि हरे-भरे पेड़ की तरह वह एक प्रगतिशील व्यक्तित्व बन जाता है। इंसान छोटे बच्चे के रूप में जन्म लेता है, उसके बाद बढ़ते-बढ़ते वह पूरा आदमी बन जाता है। यह मामला शारीरिक प्रगति का है। इसी तरह इंसान का ज़हन भी प्रगति करता है। यह प्रगति वैचारिक प्रक्रिया (thinking process) के द्वारा जारी होती है। अगर यह वैचारिक प्रक्रिया सही ढंग से जारी रहे तो इंसान का ज़हन भी इसी प्रगति के दर्जे तक पहुँच जाए, जिस तरह उसका शरीर प्रगति के दर्जे तक पहुँचता है। यह वैचारिक प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से हर इंसान के अंदर जारी होती है। इंसान को केवल यह करना है कि वह उन चीज़ों से अपने आपको बचाए, जो वैचारिक प्रक्रिया में रुकावट डालने वाली हैं। अगर वैचारिक प्रक्रिया को रुकावट से बचाया जाए तो वह एक झरने की तरह बहती रहेगी, यहाँ तक कि वह एक विशाल दरिया बन जाएगी।

जानने वाले से पूछना

क़ुरआन में कहा गया है कि अगर तुम नहीं जानते तो जानने वालों से पूछो यानी न जानने वाला जानने वाले से पूछे और इस तरह अपने न जानने को जानना बनाए। लोग आम तौर पर पूछना पसंद नहीं करते। वे समझते हैं कि पूछने का मतलब मानो यह स्वीकार करना है कि तुम जानते हो, मैं नहीं जानता। यह एक ख़तरनाक आदत है। अच्छी आदत यह है कि पूछने को वैसा ही समझा जाए, जैसा कि डिक्शनरी या एनसाक्लोलोपीडिया को पढ़ना।

कोई आदमी ख़ुद ही सारी बातों को जान नहीं सकता। इसी कमी की पूर्ति के लिए वह किताबों का अध्ययन करता है। इसी तरह उसे यह आदत डालनी

चाहिए कि वह जानने वाले से पूछे। जानने वाला उसके लिए मानो एक ज़िंदा किताब है। अगर किताब को पढ़ने से उसे कोई अहसास नहीं रोकता तो जानने वाले से पूछने में भी किसी अहसास को रुकावट नहीं होना चाहिए। जानने वाले से पूछना आपसी संबंधों (social relations) को बढ़ाता है। वह ज्ञान में वृद्धि करता है। वह इंसानी संबंधों में वृद्धि का कारण बनता है।

ईश्वर की कृपाओं पर सोच-विचार

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ईश्वर की कृपाओं पर सोच-विचार करना सबसे बड़ी इबादत है।" यह सोच-विचार सीधे तौर दिखाई नहीं देता, क्योंकि वह ज़हन में होता है, लेकिन ईश्वर की दृष्टि में उससे बड़ी कोई इबादत नहीं।

हक़ीक़त यह है कि संसार की हर चीज़ में कृपा का पहलू मौजूद है। सोच-विचार करके इन कृपाओं को जानना, चीज़ों में कृपा के पहलू की खोज करना, यही वह चीज़ है जिसको इस हदीस में श्रेष्ठ 'इबादत' कहा गया है।

चीज़ों को कृपा के पहलू से खोज करना एक ऐसा काम है, जो आदमी को ईश्वर के निकट करता है, जो आदमी को ईश्वर से जोड़ता है, वह आदमी के लिए ईश्वर की अनिभूति का सबसे बड़ा ज़रिया है।

सोच-विचार की प्रक्रिया

अबू दरदा हज़रत मुहम्मद के एक साथी थे। उनकी मौत के बाद एक आदमी ने उनकी पत्नी उम्मे-दरदा से पूछा कि अबू दरदा का सबसे बड़ा काम क्या होता था? उम्मे-दरदा ने जवाब दिया कि सोचना और सीख हासिल करना। इससे पता चलता है कि किसी इंसान का सबसे बड़ा काम यह है कि वह अपने आस-पास की चीज़ों पर सोच-विचार करे और उनसे सीख का पहलू प्राप्त करता रहे। यह मानो बौद्धिक प्रगति (intellectual progress) और आध्यात्मिक विकास (spiritual development) का काम है, जो गंभीर सोच-विचार के रूप में इंसान

के अंदर जारी होता है, वह मौत से पहले कभी समाप्त नहीं होता।

ज्ञानात्मक नम्रता

हज़रत मुहम्मद के एक साथी अब्दुल्ला इब्ने-मसऊद ने कहा— "जब तुम किसी बात को न जानो तो तुम यह कह दिया करो कि ईश्वर ज़्यादा बेहतर जानता है।" इस नियम को दूसरे शब्दों में अपने ज्ञान की नम्रता (modesty of knowledge) कहा जा सकता है और ज्ञान की नम्रता ज्ञान बढ़ाने के लिए बहुत ज़रूरी है।

अरबी भाषा में एक कहावत है— "मैं नहीं जानता, आधा ज्ञान है।" यह कह सकना कि मैं नहीं जानता, कोई साधारण बात नहीं, यह अपने न जानने को जानना है। जब आदमी अपने न जानने को जान जाए तो उसके अंदर पूछताछ की भावना (spirit of enquiry) जाग जाती है, जो अंततः उसे ज्ञान तक पहुँचा देती है। जब आदमी एक बात को न जाने तो उसे अपने न जानने को स्वीकार करना चाहिए। अपने न जानने की स्वीकृति भी जानने की तरफ़ एक क़दम है। इस स्वभाव के बिना कोई आदमी ज्ञान के लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता।

शिक्षा-दीक्षा

हज़रत मुहम्मद के एक साथी कहते हैं— "एक चिड़िया भी अगर हवा में उड़ती दिखाई देती तो आप उससे हमें एक ज्ञान की याद दिलाते थे।" इस हदीस से शिक्षा-दीक्षा की एक विस्तृत कल्पना सामने आती है। इससे पता चलता है कि शिक्षा-दीक्षा के काम का संबंध केवल स्कूल और मदरसे से नहीं, बल्कि स्कूल के दायरे से बाहर भी इसका सिलसिला जारी रहता है। हक़ीक़त यह है कि प्रकृति के संसार में हर छोटी-बड़ी चीज़ के अंदर कोई-न-कोई ज्ञान छुपा हुआ है।

शिक्षक अगर जागरूक हो तो वह अपने छात्रों के लिए स्कूल और मदरसे

के बाहर के संसार को भी शिक्षा-दीक्षा का ज़रिया बना सकता है। इसी तरह एक मार्गदर्शक अपने अनुयायियों के लिए हर दृश्य और हर अनुभव से ज्ञान इकट्ठा करके उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक दीक्षा की व्यवस्था कर सकता है।

हमारा संपूर्ण संसार एक विशाल शिक्षण-स्थल है। जो आदमी सच्चा अभिलाषी हो, वह हर क्षण अपने ज्ञान में वृद्धि करता रहेगा। उसकी ज्ञानात्मक यात्रा कभी समाप्त न होगी।

ज्ञान और गंभीरता

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जो आदमी ईश्वर से डरे, वह विद्वान है।" इस हदीस से ज्ञान के एक अहम पहलू का पता चलता है और वह गंभीरता और सतर्कता है। ज्ञान केवल जानकरी का नाम नहीं। किसी आदमी को जब गहराई से ज्ञान प्राप्त होता है तो उसका स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि ईश्वर के बारे में वह सतर्क बन जाता है। यह सतर्कता उसके अंदर गंभीरता पैदा करती है। जहाँ ज्ञान हो और गंभीरता न हो तो यह समझना चाहिए कि वहाँ सही अर्थों में वह चीज़ नहीं, जिसे ज्ञान कहा गया है।

सच्चा ज्ञान आदमी को एक नया इंसान बना देता है। सच्चे ज्ञान वाला इंसान क़ुदरत के क़ानून (law of nature) से परिचित रहता है और जो आदमी क़ुदरत के क़ानून की हक़ीक़त से परिचित हो जाए तो वह यह सहन नहीं कर सकता कि वह टकराव में जिए। वह बेख़बर अंदाज़ में बातचीत करे, वह लोगों के साथ लापरवाही से मामला करे। सच्चा ज्ञान आदमी को हर तरह की ग़ैर-ज़िम्मेदारी से बचाता है। सच्चा ज्ञान आदमी को पूर्ण अर्थों में गंभीर और ज़िम्मेदार इंसान बना देता है।

ज्ञान में वृद्धि

क़ुरआन में एक दुआ का ज़िक्र इन शब्दों में है— "ऐ मेरे रब, तू मेरे ज्ञान में वृद्धि कर दे।" इस क़ुरआनी दुआ से पता चलता है कि इस्लाम में ज्ञान की प्राप्ति की अहमियत कितनी ज़्यादा है। इस्लाम की शिक्षा यह है कि हर मर्द और हर औरत लगातार अपने ज्ञान में वृद्धि करने की कोशिश करते रहें।

दुआ हकीक़त में मज़बूत इरादे का एक रूप है। दुआ की हक़ीक़त यह है कि आदमी पूरी तरह एक उद्देश्य की प्राप्ति में लग जाए। वह अपनी हद तक सब कुछ करते हुए ईश्वर से यह दुआ करे कि वह उसकी कोशिशों को कामयाब करे। इस तरह दुआ ख़ुद आदमी के काम का एक हिस्सा बन जाती है।

हक़ीक़त यह है कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं। आदमी को चाहिए कि वह किसी जगह पर रुके बिना ज्ञान की प्राप्ति की कोशिश में लगा रहे। वह इस मामले की सारी माँगों को पूरा करते हुए ज्ञान में वृद्धि के लिए लगातार कोशिश करता रहे। ज्ञान की कोई सीमा नहीं, इसलिए ज्ञान की प्राप्ति की राह में संघर्ष की भी कोई सीमा नहीं।

अनुचित कारण

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "इंसान हमेशा दो चीज़ों के धोखे में रहता है— सेहत और फ़ुरसत" यानी वह सोचता रहता है कि जब सेहत होगी, तब कर लूँगा; जब फ़ुरसत होगी, तब कर लूँगा, लेकिन ज़िंदगी में सेहत और फ़ुरसत कभी नहीं मिलती। इसलिए वह इसी धोखे में रहता है और आख़िरकार मर जाता है।

अक़्लमंद इंसान वह है, जिसकी हालत यह हो कि वह किसी कारण को बहाना (excuse) न बनाए। जब भी कोई काम सामने आए, वह उसे तुरंत कर डाले। अभी और उसी समय से बेहतर काम करने का कोई समय नहीं।

'There is no better time to do than this very minute.'

दिल से मसला पूछना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— “अपने दिल से फ़तवा* पूछ लो।” इस हदीस में दिल से मतलब वही चीज़ है, जिसको सहज बुद्धि (common sense) कहा जाता है।

इंसान को बार-बार परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इन परेशानियों में उसे हर बार मुफ़्ती से फ़तवा पूछने की ज़रूरत नहीं। अगर इंसान अपने आपको मानसिक जटिलता से शुद्ध (complex-free person) रखे तो उसकी सहज बुद्धि उसके लिए बेहतरीन मार्गदर्शक बन सकती है और यह सहज बुद्धि एक ऐसी चीज़ है, जिसको कहीं ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं। वह हर समय और हर जगह पर इंसान के साथ हमेशा मौजूद रहती है।

अक़्लमंदी की बात

हज़रत मुहम्मद के मशहूर साथी उमर फ़ारुक़ ने कहा— “तुम झूठ को ख़त्म करो, उसके बारे में चुप रहकर।” यह स्टेटमेंट ख़ामोशी की ताक़त को बताती है।

मशहूर कहावत है कि ताली दो हाथ से बजती है। अगर आप झूठ की ताक़त के बाद ख़ुद भी जवाबी कार्रवाई करें तो झूठ को इससे ज़्यादा ताक़त मिल जाएगी। इसके विपरीत अगर आप चुप रहने के तरीक़े का इस्तेमाल करें तो झूठ का ज़ोर धीरे-धीरे अपने आप टूट जाएगा। आपकी ओर से जवाबी कार्रवाई न करने का परिणाम यह होगा कि प्रकृति की शक्तियाँ आपके समर्थन में गतिवान हो जाएँगी। वह आपके काम को ज़्यादा बेहतर रूप से परिणाम तक पहुँचा देंगी।

* इस्लामिक दृष्टिकोण से मुफ़्ती द्वारा किसी व्यक्ति विशेष को उसके किसी मामले में दी गई सलाह। यह कोई आदेश नहीं, बल्कि एक इस्लामिक विद्वान की राय होती है।

बुलंद हौसला

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "बुलंद हौसला ईमान का एक हिस्सा है।" ऐसा क्यों है? इसका कारण यह है कि ईश्वर पर विश्वास इंसान को सबसे बड़ा भरोसा देता है। यह भरोसा उसे बुलंद हौसले वाला बना देता है, लेकिन दुनिया में बार-बार इंसान को प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। यह परिस्थितियाँ उसे निराशा की ओर ले जाती हैं। अगर आदमी को ईश्वर पर विश्वास हो जाए तो वह अंतिम सीमा तक हौसलामंद बन जाएगा। ईश्वर पर विश्वास आदमी को उस समय भी भरोसा देगा, जबकि प्रत्यक्षतः उसके पास कोई भरोसा नहीं होता।

बाक़ी रहने वाला काम

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ईश्वर के निकट सबसे ज़्यादा पसंदीदा काम वह है, जो हमेशा बाक़ी रहने वाला हो।" इस संसार में कोई भी वास्तविक सफलता हमेशा देर से मिलती है, इसलिए सबसे ज़्यादा बेहतर काम वह है, जो शेष रहने योग्य हो (sustainable)। इस संसार में परिणामजनक (result oriented) काम वही है, जो शुरू करने के बाद बराबर जारी रहे। जिस पर आदमी ज़िंदगी भर जमा रह सकता हो। ऐसा ही काम प्रकृति के नियम के अनुसार है। ऐसा ही काम सही अर्थों में काम है।

आदमी को चाहिए कि वह काम शुरू करने से पहले अपने काम की योजनाबंदी करे। वह सारे संबंधित मामलों की जाँच-पड़ताल कर ले। वह अपनी योग्यता और उपलब्ध संसाधनों और समय की परिस्थितियों, हर चीज़ का भरपूर जायज़ा करे और फिर सोचे-समझे नक़्शे के अनुसार अपना काम शुरू करे और जब वह काम शुरू कर दे, फिर वह बीच में कभी उसको न छोड़े। यही संसार में सफलता का एकमात्र तरीक़ा है।

ज़माने से परिचित होना

हज़रत मुहम्मद की एक लंबी हदीस है। उसका एक हिस्सा यह है— "अक़्लमंद आदमी के लिए ज़रूरी है कि वह अपने ज़माने को जानने वाला हो।" यह हदीस बताती है कि इंसान के ज्ञान की पूर्णता क्या है। ज्ञानी होने के लिए यह काफ़ी नहीं कि आदमी किताबी जानकारी रखता हो। उसने अतीत की परंपराओं को याद रखा हो। इसी के साथ यह ज़रूरी है कि आदमी जिस ज़माने में है, उस ज़माने को जाने। वह अतीत को जानने के साथ वर्तमान को भी जानने वाला हो।

ज़माने को जानने की महत्ता वैचारिक भी है और व्यावहारिक भी। इसके बिना आदमी की सोच अधूरी रहती है। वह बातों को बड़े स्तर पर समझ नहीं पाता। सच्चाई का गहरा विश्लेषण (analysis) उसके लिए संभव नहीं होता। इस तरह व्यावहारिक रूप से वह एक अधूरा इंसान होता है। वह यह जानने से वंचित रहता है कि समय की परिस्थितियों में अनादि सच्चाइयों को किस तरह लागू करे। ऐसा आदमी अपने काम की कोई सफल योजना नहीं बना सकता।

उद्देश्यपूर्ण जीवन

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "आदमी के अच्छे इस्लाम पर होने की एक पहचान यह है कि वह बेफ़ायदा बातों को छोड़ दे।" हज़रत मुहम्मद का यह कथन बताता है कि एक उद्देश्यपूर्ण इंसान की ज़िंदगी कैसी होनी चाहिए।

हक़ीक़त यह है कि संसार में काम ज़्यादा है और एक आदमी की आयु बहुत कम। ऐसी स्थिति में ज़रूरी है कि इंसान अपने काम में चुनावी तरीक़ा अपनाए। वह केवल उन चीज़ों में व्यस्त हो, जिनका संबंध सीधे ज़िंदगी के मक़सद से हो। जो चीज़ें उसके उद्देश्य के लिए कामगर नहीं, उनसे वह पूरी तरह परहेज़ करे। वह बेफ़ायदा काम और फ़ायदेमंद काम में अंतर करना जाने।

बेफ़ायदा काम का मतलब वह काम है, जो दिलचस्पी या समय बिताने के

लिए हो, जिससे वक़्ती मनोरंजन के अतिरिक्त कुछ और प्राप्त नहीं होता हो। हक़ीक़त यह है कि इस तरह बेफ़ायदा काम में व्यस्त होना एक ऐसा ऐश-ओ-आराम (luxury) है, जिसको एक उद्देश्यपूर्ण इंसान सहन नहीं कर सकता।

लाभ पहुँचाना

क़ुरआन में बताया गया है— "इस संसार की व्यवस्था फ़ायदा पहुँचाने के नियम पर स्थापित है" यानी जो आदमी दूसरों को फ़ायदा पहुँचाएगा, उसे दूसरे से फ़ायदा मिलेगा। जितना देना, उतना पाना। इस नियम के अनुसार जब भी किसी को वंचित होने का अनुभव हो तो उसे यह मान लेना चाहिए कि ऐसा इसलिए हुआ है कि वह अपने आपको फ़ायदा पहुँचाने वाला साबित न कर सका। उसने दूसरों को वंचित रखा था, इसलिए दूसरों ने भी उसे वंचित कर दिया। अगर वह दूसरों को देता तो ज़रूर वह भी दूसरों से पाता।

फ़ायदा पहुँचाने के इस नियम का संबंध ज़िंदगी के पूरे मामले से है। इसका संबंध ख़ानदान से भी है और समाज से भी। राष्ट्रीय जीवन से भी है और अंतर्राष्ट्रीय जीवन से भी। हर व्यक्तिगत और सामूहिक मामले में यही नियम काम करता है। इसके अनुसार शिकायत और विरोध (complain and protest) का तरीक़ा बिल्कुल बेमायना है। इस संसार में हर शिकायत और विरोध ख़ुद अपनी ग़लती के ख़िलाफ़ शिकायत और विरोध है। आदमी को चाहिए कि वह शिकायत और विरोध में समय नष्ट न करे, बल्कि पहली फ़ुरसत में अपनी ग़लती को दूर करने की कोशिश करे। वह अपने आपको दूसरों के लिए फ़ायदा पहुँचाने वाला बनाए। यही समस्या का सिर्फ़ एक हल है।

शांति में मुक्ति

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जो चुप रहा, उसने मुक्ति पाई।" इस कथन से यह पता चलता है कि जिस तरह बोलना एक काम है, उसी तरह चुप रहना भी

एक काम है। जिस तरह एक्शन लेना एक काम है, उसी तरह एक्शन न लेना भी एक काम है। जिस तरह आगे बढ़ना एक काम है, उसी तरह पीछे हटना भी एक काम है। जिस तरह शक्ति की स्थिति में फ़ायदा है, उसी तरह शालीनता की स्थिति में भी फ़ायदा है। चुप रहना केवल न बोलने का नाम नहीं। चुप रहना एक उपाय है। चुप रहना शांत योजनाबंदी का दूसरा नाम है और यह एक हक़ीक़त है कि शोर की राजनीति की तुलना में चुप की राजनीति ज़्यादा परिणाम देने वाली है।

चुप रहने के बहुत सारे फ़ायदे हैं। जब आदमी चुप रहता है तो वह सोचता है। जब आदमी चुप रहता है तो वह दूसरों से सीखता है। जब आदमी चुप रहता है तो वह अपनी अंदरूनी ताक़तों को जगाता है। बेशक यह ज़रूरी है कि आदमी बोले, लेकिन इसी के साथ ज़रूरी है कि वह चुप रहने की अक़्लमंदी को जाने। कभी बात को बिगड़ने से बचाने के लिए केवल इतना काफ़ी होता है कि आदमी चुप हो जाए। चुप रहना अनदेखी करने की एक निशानी है और यह एक हक़ीक़त है कि अनदेखी करना एक बहुत समझदारी वाला काम है।

दो अलग-अलग गुण

क़ुरआन में बताया गया है कि हर इंसान के अंदर दो अलग-अलग गुण मौजूद हैं। एक नफ़्स-ए-अम्मारह और दूसरा नफ़्स-ए-लव्वामह। यह दोनों गुण पैदाइशी तौर पर हर इंसान के अंदर होते हैं। कोई भी इंसान इनसे ख़ाली नहीं है। नफ़्स-ए-अम्मारह का मतलब अहंवाद (egoism) है और नफ़्स-ए-लव्वामह का मतलब अंतरात्मा (conscience) है। यह दोनों गुण प्रारंभिक रूप से निष्क्रिय अवस्था (dormant state) में होते हैं। अगर इनको जगाया न जाए तो वह सोए हुए रहेंगे। अगर किसी आदमी के ख़िलाफ़ ऐसी बात कही जाए, जो उसे भड़काने वाली हो तो उसका नफ़्स-ए-अम्मारह जाग उठेगा और फिर उसका अंजाम वही होगा, जैसे किसी सोए हुए साँप को जगा दिया जाए। इसके

विपरीत अगर आदमी से नरम व्यवहार किया जाए तो उसका नफ़्स-ए-लव्वामह जागेगा। पहले अगर दूसरों को उससे काँटों के समान अनुभव हुआ था तो अब दूसरों को उससे फूल का अनुभव होगा। अब दूसरों को उससे इंसानियत की सुगंध प्राप्त होगी। अब वह दूसरों के लिए रहमत का नमूना बन जाएगा।

सब्र से कामयाबी

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जान लो, कामयाबी सब्र के साथ है।" सब्र का उल्टा बेचैनी को पसंद करना है। बेचैनी की कार्रवाई योजना के बिना होती है और सब्र की कार्रवाई योजना के बाद होती है और इस दुनिया में वही कार्रवाई कामयाब होती है, जो योजना के साथ की गई हो।

टकराव से परहेज़

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "मोमिन के लिए सही नहीं है कि वह अपने आपको अपमानित करे।" पूछा गया— "कोई आदमी अपने आपको क्यों अपमानित करेगा?" आपने जवाब दिया— "वह ऐसी परेशानी का सामना करे, जिससे वह निपटने की ताक़त न रखता हो।" इस हदीस में ज़िंदगी का एक सूझबूझ वाला नियम बताया गया है। वह नियम यह है कि आदमी की कार्रवाई हमेशा परिणामजनक होनी चाहिए। एक ऐसी ताक़त जिससे मुक़ाबला करने के संसाधन उसके पास न हों, अगर वह किसी वजह से ऐसी ताक़त से टकरा जाए तो इसका परिणाम यह होगा कि उसे अपमान और नाकामी का सामना करना पड़ेगा। ऐसा काम जो एकपक्षीय रूप से अपने विनाश में वृद्धि करने वाला हो, उसमें अपने आपको उलझाना किसी भी तरह से सही नहीं।

अपने से कम को देखो

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "सांसारिक मामले में अपने से ऊपर को न देखो, बल्कि अपने से नीचे को देखो। इस तरह तुम अपने ऊपर ईश्वर की कृपा को कम न समझोगे।"

इस संसार की व्यवस्था ईश्वर ने इस तरह की है कि यहाँ हमेशा ऊँच-नीच बनी रहती है। कोई आगे होता है और कोई पीछे। इसकी नीति यह है कि इस तरह प्रतिद्वंद्विता (competition) का माहौल बना रहता है। इस प्रतिद्वंद्विता के कारण ऐसा होता है कि जीवन की उन्नति और गतिविधियाँ हमेशा जारी रहती हैं। इस आधार पर ऐसा होता है कि हर आदमी से कोई आगे होता है और कोई उससे पीछे। आदमी को चाहिए कि वह हमेशा अपने से नीचे वाले को देखे। इस प्रतिद्वंद्विता का फ़ायदा यह होगा कि जो कुछ ईश्वर ने उसे दिया है, वह उसे ज़्यादा दिखाई देगा। वह इस पर ईश्वर का शुक्र करेगा। इसके विपरीत अगर वह ऐसा करे कि केवल अपने से ऊपर वाले को देखे तो उसके अंदर नफ़रत और झुंझलाहट (frustration) का स्वभाव पैदा होगा।

सकारात्मक स्वभाव (positive attitude) आदमी के बौद्धिक (intellectual) और आध्यात्मिक विकास (spiritual development) में सहायक होता है। इसके विपरीत नकारात्मक स्वभाव (negative attitude) आदमी के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को रोक देता है। आदमी को चाहिए कि वह दूसरे के लिए अपने आपको बौद्धिक विकास से वंचित न करे।

गुज़रता हुआ ज़माना

क़ुरआन में बताया गया है— "ज़माना गवाह है कि इंसान घाटे में है।" मानो इंसानी ज़िंदगी की हैसियत बर्फ़ जैसी है। जिस तरह बर्फ़ पिघलकर हर पल घटती जाती है, उसी तरह हर पल इंसान की उम्र भी घट रही है। घटते-घटते आख़िरकार वह समय आता है, जबकि इंसान अपनी उम्र पूरी करके ख़त्म हो जाता है।

जैसे हर इंसान की लगातार उल्टी गिनती (count down) हो रही है। अगर एक आदमी के लिए यह तय हो कि वह पैदा होने के बाद साठ साल तक ज़िंदा रहेगा तो जैसे पैदा होने के साथ ही उसकी उल्टी गिनती शुरू हो गई। पहला साल पूरा होने पर उसकी उम्र उनसठ साल रह गई। इसके बाद अठावन, इसके बाद सत्तावन, इसके बाद छप्पन, इसके बाद पचपन। इस प्रकार लगातार हर आदमी की उल्टी गिनती हो रही है। इस उल्टी गिनती को रोकना किसी भी आदमी के वश (control) में नहीं है। ऐसी हालत में हर आदमी को चाहिए कि वह अपने हर पल को क़ीमती समझे, क्योंकि जो समय बीत गया, वह दोबारा वापस आने वाला नहीं। जिस तरह गुज़रा हुआ ज़माना वापस नहीं आता, उसी तरह ज़िंदगी के गुज़रे हुए पल भी किसी को दोबारा वापस नहीं मिलते।

निराशा नहीं

क़ुरआन में कहा गया है— "ऐ ईश्वर के बंदो ! निराश न हों, क्योंकि ईश्वर की कृपा बहुत असीमित है।" आदमी को जब भी निराशा होती है तो इसका कारण यह होता है कि वह केवल अपनी संभावनाओं को देखता है। अगर उसकी दृष्टि ईश्वरीय संभावनाओं पर हो तो वह कभी निराश नहीं होगा।

इंसानी संभावनाओं की सीमा होती है, लेकिन ईश्वरीय संभावनाओं की कोई सीमा नहीं। इंसान अगर इस हक़ीक़त को जान ले तो वह कभी निराश न हो, क्योंकि जहाँ इंसान की प्रत्यक्ष सीमा आ गई है, ठीक उसी जगह पर वह एक और संभावना को प्राप्त कर लेगा, जिसकी न कोई सीमा है और न ही उसके लिए कोई रुकावट। हक़ीक़त यह है कि ईश्वर पर विश्वास इंसान को उम्मीद का ऐसा ख़ज़ाना दे देता है कि इसके बाद वह निराश नहीं होता। वह कभी इस अहसास से दो-चार नहीं होता कि आगे उसके लिए कुछ और शेष नहीं रहा। एक संभावना की समाप्ति उसके लिए ज़्यादा बड़ी संभावना की शुरुआत बन जाती है। ईश्वर पर विश्वास और निराशा, दोनों एक साथ एकत्र नहीं हो सकते।

उच्च आचरण

हज़रत मुहम्मद ने अपने कुछ साथियों को संबोधित करते हुए कहा— “क्या मैं तुम्हें बेहतर आचरण (character) बताऊँ?” लोगों ने कहा— “हाँ।” फिर आपने बताया— “जो तुमसे कटे, तुम उससे जुड़ो; जो तुम्हें वंचित करे, तुम उसे दो; जो तुम्हारे ऊपर अत्याचार करे, उसे माफ़ कर दो।” इसे एक शब्द में एकतरफ़ा आचरण कहा जा सकता है। इसके अनुसार उच्च आचरण यह नहीं है कि जो स्वयं अच्छा व्यवहार करे, उसके साथ आप भी अच्छा व्यवहार करें। यह बराबर का आचरण है और बराबर का आचरण उच्च आचरण नहीं। उच्च आचरण वह है, जो स्वयं अपने उच्च नियम पर आधारित हो। जो दूसरों के काम के जवाब में न हो, बल्कि ख़ुद अपने बुनियादी व्यवहार के अंतर्गत हो।

उच्च आचरण यह है कि आदमी दूसरे के व्यवहार से ऊपर होकर एकपक्षीय रूप से अच्छे आचरण पर आधारित रहे। वह प्रतिक्रिया की मानसिकता से अपने आपको बचाए और किसी भी स्थिति में अपने सकारात्मक आचरण को न छोड़े। उच्च इंसानियत की सबसे बड़ी पहचान उच्च आचरण है और उच्च आचरण की सबसे बड़ी पहचान यह है कि दूसरों की ओर से नकारात्मक व्यवहार (negative behaviour) के बाद भी जो आदमी अपने आपको सकारात्मक व्यवहार (positive behaviour) पर स्थिर रखे।

बेनफ़्स इंसान

क़ुरआन में उच्च व्यक्तित्व को बताने के लिए अल-नफ़्स-उल-मुतमइन्नह का शब्द आया है। अल-नफ़्स-उल-मुतमइन्नह को दूसरे शब्दों में मानसिक जटिलताओं से रिक्त आत्मा (complex free soul) कहा जा सकता है यानी वह इंसान, जो हर तरह की नकारात्मक अनुभूतियों और सतही (shallow) भावना से ऊपर उठकर सोच सके।

इंसान संसार में अलग-अलग परिस्थितियों के बीच रहता है। यह परिस्थितियाँ उसके अंदर अलग-अलग तरह की भावनाएँ पैदा करती रहती हैं, जैसे— घृणा, ईर्ष्या, वैमनस्य, जलन, प्रतिशोध, पक्षपात, स्वार्थ, घमंड, आत्मप्रदर्शन, पदवी की इच्छा, अस्वीकृति आदि। जो आदमी इस तरह की सारी भावनाओं से अपने आपको ऊपर उठा ले, उसे अल-नफ़्स-उल-मुतमइन्नह कहा गया है। यह एक विवेकपूर्ण व्यवहार है। कोई भी आदमी बिना कुछ किए अल-नफ़्स-उल-मुतमइन्नह नहीं बन सकता। अपने विवेक से ख़ुद अपना निरीक्षक बनना पड़ता है। वह बार-बार अपने सुधार का काम करता रहता है। इस तरह यह संभव होता है कि कोई आदमी अल-नफ़्स-उल-मुतमइन्नह बन सके।

बुराई को मिटाना

क़ुरआन में बताया गया है— "अच्छाइयाँ बुराइयों को मिटा देती हैं।" इसका मतलब यह है कि अगर तुमसे कोई बुराई हो जाए तो उसके बाद तुम अच्छाई करो। इससे बुराई का असर ख़त्म हो जाएगा। जैसे अगर आपने किसी आदमी को बुरा कह दिया तो इसके बाद उसे अच्छा कहिए। अगर आपने किसी को नुक़सान पहुँचाया हो तो इसके बाद उसे फ़ायदा पहुँचाएँ। अगर आपने किसी का दिल दुखाया है तो उससे माफ़ी माँग लीजिए। अगर आपने किसी के ख़िलाफ़ अकड़ दिखाई है तो अब उसके सामने झुक जाइए। अगर आपने किसी के साथ ग़लत व्यवहार का मामला किया है तो इसके बाद उसके साथ अच्छे व्यवहार का मामला कीजिए। अगर आपने किसी को छोटा समझ लिया है तो इसके बाद उसे सम्मानजनक स्थान दीजिए। इस तरह बुराइयाँ अपने आप समाप्त हो जाएँगी।

गुनाह क्या है?

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "गुनाह वह है, जो तुम्हारे दिल में खटके और उसको करते हुए तुम डरो कि लोग इसके बारे में न जान जाएँ।" यह गुनाह की

एक ऐसी पहचान है, जिसको हर आदमी बड़ी आसानी से समझ सकता है। हर आदमी के अंदर अंतरात्मा है। यह अंतरात्मा इतनी संवेदनशील (Sensitive) है कि वह बुराई के समय आदमी को तुरंत टोक देती है। अगर आदमी अंतरात्मा की आवाज़ सुने तो वह कभी गुनाह न करे। इसी तरह जब कोई गुनाह करता है तो वह उसे छुपाकर करता है। उसकी यह कोशिश होती है कि कोई इसे जानने न पाए। जब भी आदमी के अंदर इस तरह की भावना पैदा हो तो उसे समझ लेना चाहिए कि वह एक ऐसा काम करने जा रहा है, जो उसे नहीं करना चाहिए।

पड़ोसी का हक़

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ईश्वर की सौगंध ! वह मोमिन नहीं है, जिसकी बुराइयों के कारण उसके पड़ोसी की शांति भंग होती हो।" आदमी चाहे कहीं भी हो, हर समय वह किसी के साथ होता है। यह साथी लोग उसके पड़ोसी हैं। इन पड़ोसियों का यह हक़ है कि आपसे उन्हें किसी बुरा अनुभव न हो। दूसरे शब्दों में, इस शिक्षा का मतलब यह है कि दुनिया में हर इंसान को 'नो प्रॉब्लम' इंसान बनकर रहना चाहिए। उसे पूरी तरह से सावधान रहना चाहिए कि उसके अस्तित्व से उसके आस-पास के लोगों को कोई तकलीफ़ न पहुँचे। तकलीफ़ की कसौटी यह है कि दूसरों को शिकायत का अवसर न मिले। अगर आपके पास के लोग किसी बात पर आपसे शिकायत करें तो इसका मतलब यह है कि आप दूसरों को तकलीफ़ पहुँचा रहे हैं। दूसरों की शिकायत पर ही आपको ऐसे काम से रुक जाना चाहिए।

छोटों से प्यार, बड़ों का सम्मान

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जो अपने छोटों से प्यार न करे और जो आदमी अपने बड़ों का सम्मान न करे, वह हममें से नहीं।" इस हदीस से पता चलता है कि सज्जनता क्या है और इसको समाज में किस तरह स्थापित किया जाना चाहिए।

हर समाज में कोई छोटा होता है और कोई बड़ा। आयु की दृष्टि से भी और अन्य दृष्टि से भी। जैसे स्कूल और कॉलेज में गुरु की हैसियत बड़े की है और छात्र की हैसियत छोटे की। ऐसे अंतर वाले समाज में किस तरह संतुलन के साथ ज़िंदगी बिताई जाए। इसका साधारण नियम यह है कि बड़े लोग छोटों के साथ दया और सहानुभूति का व्यवहार करें और छोटे लोग अपने बड़ों के साथ आदर और सम्मान का तरीक़ा अपनाएँ। जिस समाज में यह दोनों नियम पाए जाएँ, उस समाज के लोगों में हर एक ख़ुश होगा और हर एक दूसरे के बारे में अच्छे विचारों का मालिक होगा।

वचन को पूरा करना

क़ुरआन में आदेश हुआ— "जब वचन दो तो उसे पूरा करो। वचन के बारे में ईश्वर के यहाँ तुमसे पूछताछ की जाएगी।" इससे पता चला कि वचन का मामला केवल दो लोगों के बीच का मामला नहीं है। इस मामले में ईश्वर भी तीसरे पक्ष की हैसियत से शामिल है।

वचन या समझौते की अहमियत इतनी ज़्यादा है कि आदमी को चाहिए कि वह या तो किसी को वचन न दे और जब वचन दे तो उसे ज़रूर पूरा करे। वचन न देना कोई अपराध नहीं, लेकिन वचन देने के बाद उसे पूरा न करना हक़ीक़त में अपराध है। यहाँ तक कि एक समझौते को तोड़ना इतना बड़ा अपराध है कि वह सभी इंसानी समझौतों को तोड़ने के समान है, क्योंकि समझौता तोड़ने की हर घटना समझौते के सम्मान की परंपरा को तोड़ना है। समझौते के सम्मान पर सामाजिक न्याय की पूरी व्यवस्था स्थापित है। अगर समझौते का सम्मान समाप्त हो जाए तो समाज में न्याय के वातावरण का अंत हो जाएगा।

अहसान का बदला

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जब कोई आदमी तुम्हारे साथ भलाई करे तो तुम इसका बदला देने की कोशिश करो और अगर तुम बदला न दे सको तो तुम उसके लिए ईश्वर से दुआ करो।"

यह सज्जनता की माँग है कि जब एक इंसान के साथ दूसरा इंसान कोई भलाई का मामला करे तो वह इसके बदले में ख़ुद भी उसके साथ भलाई करे। अगर उसकी ऐसी परिस्थिति हो कि वह भरपाई का काम न कर सके, तब भी उसके लिए भरपाई का एक काम मौजूद है। वह यह है कि वह अपने अहसान करने वाले के लिए ईश्वर से अच्छी दुआएँ करे।

दूसरे की मुसीबत पर ख़ुश न होना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुश न हों। हो सकता है कि ईश्वर उस पर कृपा करे और तुम्हें मुसीबत में डाल दे।" इस हदीस में लोगों को एक ऐसी आचरणीय बुराई से रोका गया है, जो ख़ुद अपनी बरबादी के समान है। कोई आदमी अगर किसी मुसीबत में फँस जाए तो उसे देखकर आपके अंदर हमदर्दी का अहसास पैदा होना चाहिए। आपको चाहिए कि आप उसकी मदद करें या कम-से-कम उसके लिए दुआ करें। इसके विपरीत दूसरे की मुसीबत पर ख़ुश होना एक बहुत ही छोटी बात है। वह आचरण में गिरावट का तुच्छ रूप है।

बड़ी बात यह कि कोई आदमी अगर दूसरे की मुसीबत पर ख़ुश हो तो उसका यह काम ईश्वर को बिल्कुल भी पसंद नहीं होता है। यहाँ तक कि ईश्वर नाराज़ होकर यह निर्णय करता है कि पहले आदमी की मुसीबत को उससे लेकर दूसरे आदमी के ऊपर डाल दिया जाए। बेशक, यह किसी इंसान का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

अच्छी धारणा रखना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "अच्छी धारणा इबादत का एक अच्छा रूप है।" इस हदीस से पता चलता है कि किसी के बारे में अच्छी सोच रखना इतना बड़ा काम है कि वह इबादत के समान है।

किसी के बारे में अच्छी सोच रखना एक कठिन काम है। आदमी जब कुछ लोगों के बीच रहता है तो बार-बार ऐसी बातें सामने आती हैं, जो बुरी सोच पैदा करने वाली हैं, जिसके कारण मन में आदमी की एक बुरी छवि बन जाती है। ऐसी स्थिति में अच्छी सोच का मामला कोई आसान मामला नहीं। वही आदमी दूसरों के बारे मेंअच्छी सोच रख सकता है, जो बुरी सोच के बावजूद अच्छी सोच पर क़ायम रहना जानता हो। जिसके अंदर उच्च सहनशीलता हो कि वह किसी के बारे में बुरा समाचार सुने, तब भी वह ऐसा न करे कि उसके ख़िलाफ़ ग़लत सोच लेकर बैठ जाए।

अहसान मानना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— “जो आदमी इंसान का शुक्र न करेगा, वह ईश्वर का भी शुक्र नहीं करेगा।” अहसान को मानने का नाम ही शुक्र है। यह मानसिकता अगर आदमी के अंदर मौजूद हो तो उसका इज़हार लोगों के मामले में भी होगा और ईश्वर के मामले में भी। यह असंभव है कि आदमी एक का शुक्र न करने वाला हो और वह दूसरे का शुक्र करने वाला बन जाए।

अहसान मानना एक उच्च इंसानी गुण है। इस स्वीकृति का नाम शुक्र है। इंसान के ऊपर सबसे बड़ा अहसान ईश्वर का है, इसलिए हर इंसान को सबसे ज़्यादा ईश्वर का शुक्र अदा करना चाहिए। इस शुक की पहचान यह है कि आदमी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ख़ुद अपने जैसे लोगों के अहसान को मानता हो। जिस आदमी के अंदर यह स्वीकृति न पाई जाए तो यह इस बात की निशानी है कि वह ईश्वर के अहसान के मामले में भी शुक्र करने वाला नहीं। एक दृष्टि से शुक्र और दूसरी दृष्टि से नाशुक्री, दोनों एक दिल के अंदर जमा नहीं हो सकते। आदमी के अंदर या तो दोनों के लिए शुक्र होगा या दोनों के लिए नहीं होगा।

ग़लती के बाद शर्मिंदा होना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— “हर इंसान दोषी है और बेहतर दोषी वह है, जो ग़लती करके शर्मिंदा हो।” इससे पता चलता है कि असल ग़लती, ग़लती करना नहीं है; बल्कि असल ग़लती, ग़लती करके उसको स्वीकार न करना है।

मौजूदा दुनिया इम्तिहान की दुनिया है। यहाँ आदमी को ऐसी परिस्थितियों में ज़िंदगी गुज़ारना होता है, जिसमें बार-बार ग़लती करने की संभावना होती है। इसलिए सही इंसान की असल पहचान यह नहीं है कि वह कभी ग़लती न करे, बल्कि यह है कि वह ग़लती पर हठ न करे। ग़लती करने के बाद तुरंत उसकी अंतरात्मा जाग उठे। अपनी ग़लती पर उसके अंदर बहुत ज़्यादा शर्मिंदगी पैदा हो जाए। ग़लती करना उसके लिए निरीक्षण की भावना को जगाने का ज़रिया बन जाए।

अंतरात्मा की आवाज़

हज़रत मुहम्मद से आपके एक साथी ने भलाई व बुराई के बारे में पूछा। आपने जवाब दिया— “तुम अपने दिल से फ़तवा ले लो” यानी अपने दिल से पूछकर जान लो। भलाई वह है, जिस पर तुम्हारा दिल संतुष्ट हो और बुराई वह है, जो तुम्हारे दिल में खटक पैदा करे। इंसान के अंदर पैदाइशी रूप से एक ‘फैकल्टी’ (faculty—हिस्सा) होती है। यह उसकी अंतरात्मा है। अंतरात्मा मानो सच्चाई की अदालत है। अंतरात्मा तुरंत बता देती है कि क्या चीज़ सही है और क्या चीज़ ग़लत। कौन-सा रवैया सही है और कौन-सा रवैया ग़लत। आदमी अगर केवल यह करे कि वह अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को सुने तो वह उसके मार्गदर्शन के लिए काफ़ी हो जाएगा। अंतरात्मा हमेशा अपना काम करती है। वह हर अवसर पर बताती रहती है कि क्या ठीक है और क्या ठीक नहीं। अगर इंसान असावधानी न बरते तो उसकी अंतरात्मा ही उसे सच्चाई के रास्ते पर स्थिर रखने के लिए काफ़ी रहेगी।

अमानत अदा करो

क़ुरआन में जो आदेश आए हैं, उनमें से एक आदेश यह है— “ऐ लोगो ! अमानतदारों को उनकी अमानत अदा करो।” यह क़ुरआनी आदेश एक महत्वपूर्ण आदेश है और इसका संबंध पूरी ज़िंदगी से है।

अमानत की एक स्थिति यह है कि किसी का माल आपके पास बतौर अमानत हो तो उसे उसके मालिक तक ठीक-ठीक पहुँचाना फ़र्ज़ है। इस तरह किसी पाठशाला का एक शिक्षक भी अमानतदार है और विद्यार्थी उसकी अमानत हैं। शिक्षक को चाहिए कि वह अपनी ज़िम्मेदारी को समझे और जो इंसानी नस्लें उसकी अमानत में दी गई हैं, उनके अधिकारों को निभाने में वह कोई कमी न करे। इसी तरह जब कोई आदमी किसी देश का शासक बने तो वह देश उसकी अमानत में आ गया और वह इसका अमानतदार बन गया। ऐसी स्थिति में शासक का फ़र्ज़ है कि वह उन उम्मीदों को पूरा करे, जिनके अंतर्गत उसे यह अमानत दी गई है।

शांतिप्रिय संस्कृति

इस्लाम की एक शिक्षा यह है कि जब एक आदमी दूसरे आदमी से मिले तो दोनों एक-दूसरे को ‘अस्सलाम अलैकुम’ कहें यानी तुम्हारे ऊपर सलामती हो, तुम्हारे ऊपर सलामती हो। इस्लाम दरअसल शांतिप्रिय संस्कृति है और अस्सलाम अलैकुम कहना इस शांतिप्रिय संस्कृति का एक प्रतीक है।

इस्लाम की शिक्षा यह है कि हर आदमी के दिल में दूसरे के लिए दया और प्रेम की भावना हो। हर आदमी दूसरे आदमी के लिए शांतिपूर्ण जीवन की कामना रखता हो। हर आदमी की यह कोशिश हो कि उसका समाज शांति और सुरक्षा का समाज बन जाए। यह इस्लाम की बुनियादी शिक्षा है। हक़ीक़त यह है कि इस्लाम की सारी शिक्षाएँ सीधे तौर पर या अप्रत्यक्ष रूप से शांति के नियम पर

आधारित हैं, क्योंकि शांति के बिना कोई भी निर्माण-कार्य नहीं किया जा सकता। जहाँ शांति न हो, वहाँ प्रगति भी नहीं होगी। शांति किसी समाज की प्रगति के लिए उतनी ही ज़रूरी है, जितनी कि जल धरती को उपजाऊ बनाने के लिए।

शांतिप्रियता

हज़रत मुहम्मद ने अपनी नसीहत में कहा— "तुम दुश्मन से मुठभेड़ की ख़्वाहिश न करो, बल्कि ईश्वर से शांति माँगो।" इस हदीस में जीवन का एक मूल नियम बताया गया है। इस नियम का महत्व एक आदमी के लिए भी है और क़ौम के लिए भी। कोई इंसान जब सामूहिक जीवन में रहता है तो एक-दूसरे के बीच मतभेद पैदा होते हैं, यहाँ तक कि दुश्मनी की स्थिति पैदा हो जाती है, लेकिन यह तरीक़ा सही नहीं है कि कोई आदमी दुश्मन दिखाई दे तो आप उससे लड़ने के लिए तैयार हो जाएँ। इसके बजाय सही तरीक़ा यह है कि दुश्मन से भी टकराव का तरीक़ा अपनाया न जाए, बल्कि शांति के नियम पर चलते हुए उससे निबाह करने की कोशिश की जाए। शांतिपूर्ण तरीक़ा हर स्थिति में व्यवहार योग्य है। ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि इंसान दुश्मनी की स्थिति पैदा होने के बाद नकारात्मक मानसिकता का शिकार न हो।

शांतिपूर्ण नागरिक

पैग़ंबरे-इस्लाम ने कहा— "मुस्लिम वह है, जिसके हाथ से और जिसकी ज़ुबान से लोग सुरक्षित रहें।" इसका मतलब यह है कि ईश्वर का सच्चा बंदा वह है, जो समाज में अहिंसक बनकर रहे। दूसरों को न उसकी ज़ुबान से कोई चोट पहुँचे और न ही उसके हाथ से किसी को तकलीफ़ का अनुभव हो। यह इंसानियत का कम-से-कम स्तर है। इंसानियत का उच्च स्तर यह है कि हर मर्द और हर औरत अपने समाज में इस तरह रहें कि एक से दूसरे को फ़ायदा पहुँच रहा हो और अगर कोई आदमी दूसरों को फ़ायदा न पहुँचा सके तो उसे कम-

से-कम यह करना चाहिए कि वह अपने समाज में समस्या न पैदा करने वाला इंसान (problem free person) बन जाए। वह दूसरों को अपनी चोट से बचाए।

कोई आदमी जब अपनी ज़ुबान या अपने हाथ से दूसरों को नुक़सान पहुँचाने लगे तो वह अपनी इंसानियत को खो देता है। वह इंसानियत के स्तर से गिरकर हैवानियत के स्तर पर आ जाता है। इंसानियत की सच्ची कसौटी यह है कि आदमी इतना संवेदनशील हो कि दूसरों के लिए हानि पहुँचाने का कारक बनने को सहन न कर सके।

जो आदमी इस मामले में संवेदनशील हो, वह दूसरों को नुक़सान पहुँचाकर ख़ुश नहीं होगा, बल्कि यह समझेगा कि मैंने ख़ुद अपने आपको इंसानियत के स्तर से नीचे गिरा लिया है। अगर कभी उसके कारण किसी को नुक़सान पहुँच जाए तो वह तुरंत शर्मिंदा हो जाएगा और नुक़सान की भरपाई करने की कोशिश करेगा। उसे उस समय तक चैन न आएगा, जब तक कि वह अपने भाई से माफ़ी न माँग ले या अपनी कमी की पूर्ति न कर ले।

हानि से बचो

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "इस्लाम में न नुक़सान उठाना है और न नुक़सान पहुँचाना।" यह हदीस एक महत्वपूर्ण सामूहिक नियम को बताती है। इस नियम का संबंध मर्द से भी है और औरत से भी, एक आदमी से भी है और समूह से भी, वह राष्ट्रीय जीवन के लिए भी है और अंतर्राष्ट्रीय जीवन के लिए भी।

वर्तमान संसार में हर आदमी को अलग-अलग परिस्थितियों के बीच रहना पड़ता है— कभी अनुकूल परिस्थितियाँ और कभी प्रतिकूल परिस्थितियाँ, कभी ख़ुशी की परिस्थितियाँ तो कभी दुख की परिस्थितियाँ।

ऐसी परिस्थिति में कोई मर्द या औरत संसार में कैसे रहें, इसके लिए यह एक विस्तृत नियम है। वह यह कि हर आदमी एक ओर इस तरह नुक़सान न पहुँचाने वाला बनकर रहे कि उसके कारण किसी को कोई तकलीफ़ न पहुँचे

और दूसरी ओर वह इतना सावधान रहे कि किसी दूसरे को यह अवसर न मिले कि वह उसे नुक़सान पहुँचा सके।

ज़्यादा बड़ी ताक़त

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ईश्वर नम्रता पर वह चीज़ देता है, जो वह कठोरता पर नहीं देता।" इन शब्दों में प्रकृति का एक क़ानून बताया गया है। वह यह कि संसार को बनाने वाले ने उसको इस तरह बनाया है कि यहाँ नम्रता और अहिंसा से काम बने और कठोरता व हिंसा से काम बिगड़ जाए। नम्रता व अहिंसा से उपयोगी परिणाम निकले और कठोरता व हिंसा का तरीक़ा बिना परिणाम के ही रह जाए। कठोरता और हिंसा का तरीक़ा दिल की भड़ास निकालने के लिए काफ़ी हो सकता है, लेकिन वह किसी रचनात्मक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उपयोगी नहीं। निर्माण व प्रगति का काम एक ऐसा तरीक़ा चाहता है, जो शुरू करने के बाद लगातार जारी रहे। पायदार काम का यह गुण केवल अहिंसात्मक तरीक़े में पाया जाता है।

सुलह बेहतर है

क़ुरआन की एक आयत में लोगों को संबोधित करते हुए कहा गया है— "सुलह बेहतर है।" इसका मतलब यह है कि जब कोई विवादित मामला सामने आए तो उस समय सही यह है कि लोग टकराव का तरीक़ा न अपनाएँ, बल्कि सुलह के तरीक़ा को अपनाएँ। ज़िंदगी में बार-बार ऐसा होता है कि एक-दूसरे के बीच कोई विवाद पैदा हो जाता है। ऐसी स्थिति में लोगों के सामने दो संभव उपाय होते हैं। एक यह कि टकराव और हिंसा के द्वारा उसको हल करने की कोशिश की जाए और दूसरा यह कि शांतिपूर्ण वार्ता के द्वारा आपस में समझौता कर लिया जाए और विवाद को आरंभिक चरण में ही समाप्त कर दिया जाए।

यह एक हक़ीक़त है कि समझौते का तरीक़ा ही दोनों पक्षों के लिए

फ़ायदेमंद है। टकराव का तरीक़ा हमेशा उल्टा परिणाम पैदा करता है। इसमें आपस की नफ़रत बढ़ती है और जहाँ तक असल समस्या का संबंध है, वह भी हल नहीं होती। अगर लोग मामले को परिणाम के पहलू से देखें तो वे कभी टकराव का रास्ता न अपनाएँ, क्योंकि टकराव का रास्ता आदमी को विनाश के अतिरिक्त और कहीं नहीं पहुँचाता।

सामाजिक सेवा

क़ुरआन में बताया गया है— "ईश्वर के जो सच्चे बंदे हैं, उनके माल में साइल और महरूम का अधिकार होता है।" साइल से मतलब उस आदमी से है, जो बोलकर माँग करे और महरूम से मतलब उस आदमी से है, जो चाहे माँग न करे, लेकिन उसकी लाचारी अपने आप एक व्यावहारिक माँग बन गई हो।

ईश्वर के सच्चे बंदे अपनी कमाई को उस समय तक अपने लिए सही नहीं समझते, जब तक वे उसमें से साइल और महरूम को उसका हिस्सा न दे दें। यह शिक्षा हर इंसान को अपने समाज का सेवक बना देती है। वह जिस समाज से अपने लिए लेता है, उस समाज को देना भी वह अपना फ़र्ज़ समझता है।

साइल से मतलब आम ज़रूरतमंद हैं। महरूम से मतलब विशेष रूप से वे लोग हैं, जो किसी कारण से असमर्थ हो गए हों। असमर्थ लोगों की सेवा करना इस्लाम के निकट केवल सामाजिक सेवा नहीं है, यह स्वयं अपने आपको ईश्वर की अनंत दया का पात्र बनाना है।

सभी इंसान एक

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "सुन लो कि सभी लोग आदम* की संतान हैं और सुन लो कि आदम मिट्टी से थे।" यह हदीस इस हक़ीक़त की घोषणा है कि

---

* पहला इंसान, जिसको ईश्वर ने बनाया।

सभी इंसान बराबर हैं। इनमें कुछ बाहरी अंतर हो सकते हैं, लेकिन हक़ीक़त की दृष्टि से एक-दूसरे में कोई अंतर नहीं है। यह हदीस इंसानी संबंधों के एक महत्वपूर्ण नियम को बताती है और वह समानता का नियम है। सभी इंसान जब एक ही तत्व से पैदा हुए हैं और सब एक मर्द व एक औरत की संतान हैं तो उनमें अंतर अपने आप समाप्त हो जाता है। उसके अनुसार, सभी मर्द एक-दूसरे के ख़ूनी भाई (blood brothers) हैं और सभी औरतें एक-दूसरे की ख़ूनी बहनें (blood sisters) हैं। यह नियम इंसान और इंसान के बीच अंतर की सारी बुनियादों को समाप्त कर देता है।

परामर्श का महत्व

क़ुरआन के अनुसार मामलों में परामर्श (consultation) पर ज़ोर दिया गया है। हज़रत मुहम्मद के बारे में रिवायत* में आता है कि आप मामलों में हमेशा लोगों से परामर्श करते थे।

परामर्श क्या है? परामर्श यह है कि किसी भी होने वाले मामले में हर एक की राय मालूम की जाए। इस तरह हर आदमी का ज्ञान और अनुभव सामने आ जाता है और यह संभव हो जाता है कि ज़्यादा सही रूप में मामले को हल करने की कोशिश की जाए। ज़्यादा सही योजना बनाकर काम को शुरू किया जाए।

परामर्श के बिना जो काम किया जाए, वह एक आदमी की सोच पर आधारित होगा और परामर्श के बाद जो काम किया जाए, उसमें कई लोगों की सोच शामिल हो जाएगी।

परामर्श हक़ीक़त में सामूहिक सोच का दूसरा नाम है। व्यक्तिगत सोच और सामूहिक सोच में जो अंतर है, वही अंतर परामर्श के बिना काम और परामर्श के साथ काम में पाया जाता है। विभिन्न कारणों से ऐसा होता है कि एक आदमी का ज़हन हर पहलू को समझ नहीं पाता। परामर्श इसी कमी की पूर्ति है। परामर्श

---

* पैग़ंबर की बातें, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज़बानी हम तक पहुँचीं।

के द्वारा यह संभव हो जाता है कि मामलों में ज़्यादा सही राय तक पहुँचा जाए। पहले से ही ग़लतियों से बचने का उपाय किया जाए। परामर्श सफल योजनाबंदी का एक अहम हिस्सा है।

बोलचाल बंद न करना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "किसी आदमी के लिए सही नहीं कि वह अपने भाई से तीन दिन से ज़्यादा बोलचाल बंद रखे।" इसका मतलब यह है कि अगर किसी से झगड़ा हो जाए और बोलचाल बंद होने की स्थिति पैदा हो जाए तो ज़्यादा-से-ज़्यादा उसे तीन दिन की माफ़ी मिल सकती है। तीन दिन से ज़्यादा बोलचाल बंद रखना किसी भी स्थिति में सही नहीं। इस मामले में तीन दिन की छूट इसलिए दी गई है कि ग़ुस्सा ज़्यादा-से-ज़्यादा तीन दिन तक रह सकता है। इसके बाद वह घमंड का सवाल बन जाता है। किसी को ग़ुस्से के लिए माफ़ी मिल सकती है, लेकिन घमंड की माफ़ी किसी के लिए नहीं। ग़ुस्सा एक स्वाभाविक कमज़ोरी है, जो वक़्ती तौर पर पैदा होती है, लेकिन घमंड एक बुराई है। घमंड एक हठधर्मी का मामला है। यही कारण है कि ग़ुस्सा माफ़ी के लायक़ है, लेकिन घमंड और हठधर्मी माफ़ी के लायक़ नहीं। थोड़ी देर के ग़ुस्से के लिए आदमी के पास कारण हो सकता है, लेकिन घमंड और हठधर्मी एक ऐसा अपराध है, जिसके लिए कोई भी स्वीकार्य कारण मौजूद नहीं।

मानने से पहले जाँचना

क़ुरआन में आदेश दिया गया है कि जब तुम्हें किसी के बारे में कोई ख़बर मिले तो पहले उसकी जाँच-पड़ताल करो। इससे पता चलता है कि जाँच-पड़ताल के बिना किसी ख़बर को मान लेना एक ग़ैर-जिम्मेदारी का काम है।

सामान्य रूप से लोगों का स्वभाव यह होता है कि जो सुना या जो कुछ पढ़ा, उसको तुरंत मान लिया। हालाँकि अनुभव बताता है कि ख़बर देने वाला

अक्सर ऐसा करता है कि वह सारी बात को जाने बिना ख़बर को फैला देता है, जबकि जाँच-पड़ताल के बाद पता चलता है कि वह ख़बर भी अधूरी थी और उससे जो परिणाम निकाला गया, वह भी अधूरा था।

जाँच-पड़ताल के बिना किसी ख़बर को मान लेना अक्सर परिस्थितियों में नुक़सान का कारण होता है। इससे ग़लत गुमान पैदा होते हैं। लोग एक-दूसरे के बारे में ग़लत राय बना लेते हैं, यहाँ तक कि कभी-कभी कोई एक ग़लत ख़बर लड़ाई और झगड़े का कारण बन जाती है। ऐसी स्थिति में ज़िम्मेदारी की माँग यह है कि ख़बर की पूरी जाँच-पड़ताल की जाए। जाँच-पड़ताल के बिना किसी भी ख़बर को सही न मान लिया जाए।

सभी इंसान भाई-भाई

हज़रत मुहम्मद ने कहा—"ऐ ईश्वर, मैं गवाही देता हूँ कि सभी लोग आपस में भाई-भाई हैं।" यह हदीस इंसानी संबंधों की बुनियाद बताती है। इसके अनुसार सारे संसार के लोग एक ख़ानदान की तरह हैं। हर एक को चाहिए कि वह दूसरे के साथ वही व्यवहार करे, जो वह अपने घर के अंदर अपने भाई से करता है। यह नियम वैश्विक भाईचारे (universal brotherhood) का नियम है। यह नियम अपने और पराये के विभाजन को समाप्त कर देता है। उसके बाद सब अपने हो जाते हैं। कोई किसी का पराया नहीं रहता। यह नियम सारी इंसानियत को एक ऐसे मज़बूत रिश्ते में बाँध देता है, जिससे ज़्यादा मज़बूत कोई और रिश्ता नहीं।

तीन चीज़ें वर्जित

हज़रत मुहम्मद ने कहा—"एक इंसान पर दूसरे इंसान की तीन चीज़ें वर्जित हैं— उसका ख़ून, उसका माल और उसकी इज़्ज़त।" यह नियम एक इंसान और दूसरे इंसान के बीच आज़ादी की सीमा को स्थापित करता है। हर इंसान आज़ाद है, लेकिन उसकी आज़ादी वहाँ ख़त्म हो जाती है, जहाँ वह दूसरे की जान-माल

और इज़्ज़त के लिए ख़तरा बन जाए।

इंसान को इस संसार में आज़ादी दी गई है, क्योंकि आज़ादी के बिना कोई उन्नति नहीं हो सकती, लेकिन यह आज़ादी सीमित है, न कि असीमित। किसी आदमी को उसी समय तक आज़ादी प्राप्त है, जब तक वह दूसरे की जान-माल और इज़्ज़त को नुक़सान न पहुँचाए। जैसे ही कोई आदमी इन तीन चीज़ों में दूसरों के लिए ख़तरा बने, उसकी आज़ादी ख़त्म हो जाएगी। वह आज़ादी के प्राकृतिक अधिकार से वंचित कर दिया जाएगा।

हर आदमी ज़िम्मेदार है

हज़रत मुहम्मद ने कहा—"सुन लो, तुममें से हर एक चरवाहा है और तुममें से हर आदमी से उसके गल्ले के बारे में सवाल किया जाएगा।" इस हदीस में चरवाहे और गल्ले के उदाहरण द्वारा ज़िंदगी की एक हक़ीक़त को बताया गया है। जिस तरह चरवाहे का गल्ला होता है, उसी तरह हर इंसान का अपनी परिस्थितियों की दृष्टि से एक गल्ला है और उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने इस गल्ले की चरवाही में अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करे।

जैसे— एक घर का जो बड़ा आदमी है, उसका गल्ला उसका ख़ानदान है। उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने ख़ानदान के सिलसिले में अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाए। इसी तरह एक स्कूल या कॉलेज का एक शिक्षक अपने छात्रों का ज़िम्मेदार है। उसका फ़र्ज़ है कि वह छात्रों के हक़ में अपनी शिक्षा से संबंधित ज़िम्मेदारी को पूरी तरह से निभाए। इसी तरह एक लीडर अपने अनुयायियों का ज़िम्मेदार है। उसका फ़र्ज़ है कि जो लोग उसका साथ दे रहे हैं, वह पूरी तरह से उनका शुभचिंतक बने। इसी तरह किसी संस्था का अध्यक्ष अपनी संस्था से संबंध रखने वाले लोगों का ज़िम्मेदार है। उसका फ़र्ज़ है कि वह उन संस्था से संबंध रखने वालों के बारे में अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाए।

हर एक की मदद

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "तुम अपने भाई की मदद करो, चाहे वह ज़ालिम हो या पीड़ित।" लोगों ने पूछा— "पीड़ित की मदद करना तो हम जानते हैं, लेकिन ज़ालिम की मदद कैसे करें?" आपने कहा— "तुम ज़ालिम को उसके ज़ुल्म से रोको।" इस्लाम हर इंसान के अंदर यह भावना पैदा करना चाहता है कि वह दूसरे इंसान का शुभचिंतक हो और इसी शुभेच्छा का व्यावहारिक नाम मदद है।

पीड़ित की मदद यह है कि उसे ज़ुल्म से बचाया जाए। ज़ालिम की मदद यह है कि उसे उसके ज़ुल्म से रोका जाए। ज़ुल्म से रोकने का मतलब यह नहीं है कि उसके साथ टकराव शुरू कर दिया जाए। ज़ालिम की सच्ची मदद यह है कि उसके सुधार के लिए दुआ की जाए। उसको भलाई के साथ नसीहत की जाए। ऐसी परिस्थितियाँ पैदा की जाएँ कि उसे अपनी ग़लती का अहसास हो और वह ज़ुल्म को छोड़ने पर राज़ी हो जाए। ज़ालिम की मदद ज़ालिम से नफ़रत करना नहीं है, बल्कि उसके साथ भलाई करना है। नफ़रत ज़ुल्म को बढ़ाती है और भलाई ज़ुल्म को ख़त्म कर देती है।

विनम्र व्यवहार

हज़रत मुहम्मद ने अपने साथियों को एक युद्ध पर भेजा और उनको सीख देते हुए कहा— "तुम लोगों के साथ विनम्रता से व्यवहार करना, क्योंकि तुम आसानी पैदा करने वाले बनाकर भेजे गए हो, तुम कठिनाई पैदा करने वाले बनाकर नहीं भेजे गए।" इस हदीस का संबंध हर विभाग में काम करने वालों से है। इसमें हर एक के लिए सीख है, जैसे— एक अफ़सर को अपने अधीन कर्मचारियों के साथ इसी नियम पर काम करना है। एक शिक्षक को अपने छात्रों के साथ यही मामला करना है। एक मैनेजर को अपनी कंपनी वालों के साथ इसी तरह का व्यवहार करना है आदि।

हर आदमी को चाहिए कि वह इस सीख को ध्यान में रखे। वह यह समझे कि वह जहाँ है, वहाँ उसे ईश्वर की ओर से भेजा गया है। उसे लोगों को परेशानी में नहीं डालना है, बल्कि उनके लिए आसान रास्ता ढूँढ़ना है।

दया का फॉर्मूला

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "तुम ज़मीन वालों पर दया करो, आसमान वाला तुम पर दया करेगा।" यह एक साधारण नियम है, जो हर औरत और हर मर्द के अंदर भलाई के काम की वह भावना उभारता है, जो कभी ख़त्म नहीं होती।

हर इंसान ईश्वर की मदद का मोहताज है। हर औरत और मर्द की ज़रूरत है कि वह ज़िंदगी के अलग-अलग पड़ावों में ईश्वर की मदद प्राप्त करते रहें। कोई भी आदमी इस संसार में ईश्वर की मदद के बिना सफल नहीं हो सकता।

अपने आपको ईश्वर की मदद का पात्र बनाने की सबसे आसान तरीक़ा यह है कि आदमी जो कुछ ख़ुद अपने लिए ईश्वर से चाहता है, वही दूसरों को देने लगे। वह चाहता है कि ईश्वर उसकी मदद करे तो उसको भी चाहिए कि वह दूसरों का मददगार बन जाए। वह चाहता है कि ईश्वर उसके साथ विनम्रतापूर्ण व्यवहार करे तो वह भी दूसरों के साथ विनम्रतापूर्ण व्यवहार करे। वह चाहता है कि ईश्वर उसकी कमियों की अनदेखी करे तो उसको चाहिए कि वह भी दूसरों की कमियों की अनदेखी करता रहे। इंसान के साथ विनम्रता और प्यार भरा व्यवहार करना मानो एक व्यावहारिक दुआ है। यह व्यवहार की भाषा में ईश्वर से यह कहना है कि हे ईश्वर! मैंने तेरे बंदों के साथ विनम्रता और प्यार भरा व्यवहार किया तो तू भी मेरे साथ दया और प्यार भरा व्यवहार कर।

पारस्परिक सम्मान

क़ुरआन में पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद की ज़ुबान से कहलवाया गया है— "ऐ लोगो ! तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म और मेरे लिए मेरा धर्म।" यह आयत बताती है कि

किसी समाज में जब कई धर्म के लोग रहते हैं तो उनके बीच संतुलित वातावरण किस तरह स्थापित किया जाए। इसका साधारण फॉर्मूला यह है— एक का अनुसरण करो और हर एक का सम्मान करो : 'Follow one and respect all'

सम्मिलित धार्मिक समाज में शांति स्थापित करने का केवल यही एकमात्र नियम है। यह संसार मतभेदों का संसार है। इस संसार में मतभेदों को समाप्त करना संभव नहीं। ऐसी स्थिति में व्यावहार योग्य फॉर्मूला केवल एक है और वह सहनशीलता है यानी हर एक को यह अधिकार देना कि वह अपनी रुचि के अनुसार धर्म या संस्कृति को अपनाए। मतभेद के विषय पर एक-दूसरे से शांतिपूर्ण वार्तालाप हो सकता है, लेकिन मतभेद को मिटाने की कोशिश केवल ज़्यादा मतभेद को पैदा करेगी। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।

धार्मिक सम्मान

हज़रत मुहम्मद के दौर में मदीने में कुछ यहूदी क़बीले रहते थे। एक दिन हज़रत मुहम्मद ने देखा कि एक रास्ते से एक अर्थी गुज़र रही है। हज़रत मुहम्मद उस समय बैठे हुए थे। अर्थी को देखकर आप उसके सम्मान में खड़े हो गए। आपके एक साथी ने कहा— "ऐ अल्लाह के रसूल, यह तो एक यहूदी की अर्थी थी।" तब आपने कहा— "क्या वह इंसान नहीं?"

इससे पता चला कि इंसान हर स्थिति में आदर के योग्य है— चाहे वह एक धर्म का हो या दूसरे धर्म का, वह एक समुदाय का आदमी हो या दूसरे समुदाय का। किसी भी बहाने के आधार पर उसका सम्मान समाप्त नहीं किया जा सकता। हक़ीक़त यह है कि हर इंसान एक ही ईश्वर का पैदा किया हुआ है। इस दृष्टि से सभी इंसान समान रूप से सम्मान के योग्य हैं।

दुश्मन में दोस्त

क़ुरआन में बताया गया है— "अगर कोई आदमी तुम्हें अपना दुश्मन दिखाई दे तो तुम उससे जवाबी दुश्मनी न करो, बल्कि उसके साथ अच्छा

व्यवहार करो।" इस एकपक्षीय व्यवहार का परिणाम यह होगा कि तुम्हारा दुश्मन तुम्हारा दोस्त बन जाएगा। इस्लाम की यह शिक्षा बताती है कि दुश्मनी कोई हमेशा बाक़ी रहने वाली चीज़ नहीं। हक़ीक़त यह है कि हर दुश्मन इंसान में एक दोस्त इंसान छुपा हुआ है। अपने एकपक्षीय अच्छे व्यवहार से इस संभावना को हक़ीक़त बनाओ। अपने दुश्मन को अपने दोस्त में बदल लो।

बदले में किया गया अच्छा व्यवहार आदमी की अंतरात्मा को जगाता है और जिस आदमी की अंतरात्मा जाग उठे, उसके लिए यह संभव नहीं है कि वह आपसे दुश्मनी रखे और दोस्त न बने।

विनम्रता के बिना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जो आदमी विनम्रता से वंचित है, वह हर भलाई से वंचित है।" यह हदीस एक दृढ़ सदाचारी नियम को बताती है और वह बातचीत और संबंधों में विनम्रता है। जो आदमी विनम्रता का तरीक़ा अपनाए, वह हर मामले में और हमेशा सफल रहेगा, क्योंकि कोई आदमी ऐसे आदमी का दुश्मन नहीं बनेगा। इसके विपरीत जो आदमी दूसरों से व्यवहार करने में विनम्रता का तरीक़ा न बरते, उसका हर काम बिगड़ता चला जाएगा, क्योंकि उससे हर एक को शिकायत हो जाएगी। उसको विरोधियों और दुश्मनों के बीच रहना पड़ेगा। वह घर के अंदर और बाहर, दोनों जगह अनावश्यक मामलों में उलझा रहेगा।

सादगी की महानता

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "सादगी ईमान का एक हिस्सा है।" सादगी को ईमान का हिस्सा बताना सादगी के बहुत बड़ी अहमियत को ज़ाहिर करता है। सादगी उद्देश्यपूर्ण इंसान का तरीक़ा है। उद्देश्यपूर्ण इंसान यह सहन नहीं कर सकता कि वह सुविधा और ऐश (luxury) की चीज़ों में लिप्त हो जाए और इस तरह अपने समय और ताक़त का एक हिस्सा उसमें लगा दे। सादगी का मतलब है अपनी ज़रूरत को

बिल्कुल अनिवार्य चीज़ों तक सीमित रखना। अपने आपको किसी अनावश्यक चीज़ का आदी न बनाना, अपने आपको आराम वाली चीज़ों से दूर रखना। सादगी वास्तव में एक उच्च उपाय है। सादगी के द्वारा यह संभव हो जाता है कि आदमी अपनी ज़िंदगी को पूरी तरह से केवल अपने उद्देश्य में लगाए। उसकी ज़िंदगी का कोई हिस्सा उद्देश्य के अलावा किसी और चीज़ में नष्ट न हो। किसी इंसान की उन्नति के लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी चीज़ यह है कि उसके अंदर सोचने की प्रक्रिया बिना रोक-टोक जारी रहे। सादगी इस बौद्धिक व्यवहार में अत्यंत सहायक है। सादगी आदमी के ज़हन को हर दूसरी चीज़ (distraction) से दूर रखती है।

सफ़ाई की महत्ता

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "सफ़ाई भी ईमान का एक हिस्सा है।" इस हदीस से पता चलता है कि साफ़-सुथरा रहना और अपने वातावरण को साफ़-सुथरा बनाना इस्लाम में कितनी ज़्यादा अहमियत रखता है।

इस्लाम अपनी हक़ीक़त की दृष्टि से यह है कि आदमी अपने दिल और आत्मा को पवित्र करे। वह बुरे विचारों को छोड़कर पवित्र विचारों में जीने लगे। वह अपने आंतरिक अस्तित्व को उसी तरह अच्छे विचारों से पवित्र बनाए, जिस तरह कोई आदमी अपने शरीर को पानी से धोकर पवित्र बनाता है।

कोई आदमी जब अपने आंतरिक हिस्से को साफ़-सुथरा बनाएगा तो स्वाभाविक रूप से वह यह चाहेगा कि उसका बाहरी हिस्सा भी साफ़-सुथरा रहे। वह अपने शरीर और अपने कपड़े की सफ़ाई का ध्यान रखेगा। वह अपने घर और अपने वातावरण को साफ़-सुथरा रखने की कोशिश करेगा। सफ़ाई ऐसे इंसान का स्थायी स्वभाव बन जाएगी।

बीच का रास्ता

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "सबसे सही तरीक़ा बीच का तरीक़ा है।" इस शिक्षा को दूसरे शब्दों में इस तरह कह सकते हैं कि सबसे सही रास्ता बीच का

रास्ता (middle path) है।

वर्तमान संसार में आदमी को बहुत से लोगों के बीच जीवन व्यतीत करना होता है। ऐसी स्थिति में सही तरीक़ा वह है, जिसमें आदमी का रास्ता किसी रुकावट के बिना तय होता रहे और किसी से टकराव भी न हो। इसी रास्ते को बीच का रास्ता कहा जाता है। बीच का तरीक़ा हमेशा संतुलित तरीक़ा होता है और संतुलित तरीक़ा हमेशा व्यवहार के योग्य होता है। ऐसे तरीक़े में आदमी अपने आपको किसी बड़े ख़तरे में डाले बिना आगे बढ़ सकता है। संतुलित तरीक़े में किसी ऐसे बड़े नुक़सान का शक नहीं होता, जिसके बाद आदमी की पूरी योजना बिखर जाए और आख़िर में वह निराशा (hopelessness) का शिकार होकर बैठ जाए।

तवाज़ो से उन्नति

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जो आदमी तवाज़ो (modesty) का तरीक़ा अपनाए, ईश्वर उसे ऊँचाई पर पहुँचा देता है।" यह ईश्वर का निर्धारित किया हुआ एक क़ानून है। इसके अनुसार, तवाज़ो का व्यवहार आदमी के लिए प्रगति के रास्ते खोलता है। इसके विपरीत घमंड का तरीक़ा आदमी को पतन की ओर ले जाता है। तवाज़ो का फ़ायदा दोतरफ़ा है। तवाज़ो करने वाले को इसका यह फ़ायदा मिलता है कि उसके अंदर आध्यात्मिकता जागती है। उसके अंदर उच्च इंसानी गुण पैदा होते हैं। वह ईश्वर के वरदानों को प्राप्त करने लगता है। उसके अंदर हक़ीक़त को पसंद करने वाला स्वभाव पैदा हो जाता है। वह इस योग्य हो जाता है कि चीज़ों को निष्पक्ष (objectively) ढंग से देख सके।

वह आदमी जिसके साथ तवाज़ो का व्यहवार किया जाए, वह अपनी अंतरात्मा की आवाज़ के तहत तवाज़ो करने वाले की महानता को मानने पर मजबूर हो जाता है। वह उसके मुक़ाबले में विद्रोह करने की भावना खो देता है। वह मजबूर हो जाता है कि उसके आचरण की बड़ाई को माने। वह अपनी तुलना में उसको ज़्यादा बड़ा इंसानी दर्जा दे।

तवाज़ो केवल एक आचरण है। इसमें आदमी को कुछ ख़र्च नहीं करना

पड़ता। तवाज़ो करके उसे कुछ खोना नहीं पड़ता, लेकिन कुछ न खोकर वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है। तवाज़ो के विरुद्ध आचरण अगर झूठी बड़ाई है तो तवाज़ो के अनुसार आचरण सच्ची इंसानियत।

फ़िज़ूलख़र्ची नहीं

क़ुरआन में फ़िज़ूलख़र्ची से मना किया गया है यानी वास्तविक ज़रूरत के बिना ख़र्च करना। हज़रत मुहम्मद ने कहा— "यह भी फ़िज़ूलख़र्ची है कि तुम हर वह चीज़ ख़ाओ, जिसको खाने की इच्छा तुम्हारे दिल में पैदा हो।"

आदमी अपनी कमाई को अगर वास्तविक ज़रूरतों में ख़र्च करे तो यह उसका उचित अधिकार है, लेकिन अगर वह इच्छा और आनंद के लिए ख़र्च करने लगे तो फिर उसका अधिकार किसी को नहीं। ईश्वर ने अगर किसी को धन-दौलत ज़्यादा दी है तो इसलिए नहीं दी है कि वह उसको केवल अपने ऊपर ख़र्च करता रहे। धन-दौलत ईश्वर की धरोहर है और उसको चाहिए कि उस धरोहर को वह उन्हीं मदों में ख़र्च करे, जो ईश्वर ने उसके लिए निर्धारित की हैं। जो आदमी ऐसा न करे, वह मानो ईश्वर की धरोहर में पूरा नहीं उतरा।

सामूहिक कल्याण

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "एक आदमी का खाना दो आदमी के लिए काफ़ी है और दो आदमी का खाना तीन आदमी के लिए काफ़ी है।" इस हदीस में मिल-जुलकर रहने और सामूहिक रूप से काम करने में कल्याण को बताया गया है।

इस हदीस में भोजन का उदाहरण एक प्रतीकात्मक उदाहरण है। हक़ीक़त यह है कि इस हदीस का संबंध ज़िंदगी के सभी मामलों से है। लोग अगर एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करें और मिल-जुलकर रहें तो थोड़े लोग भी ज़्यादा बड़े-बड़े काम करेंगे। थोड़ी पूँजी में भी बहुत से लोगों को फ़ायदा हासिल होगा।

कम साधनों में भी ज़्यादा फ़ायदा हासिल करना संभव हो जाएगा।

हर आदमी अगर अलग-अलग अपना काम करे तो वह सीमित रूप से केवल अपने आपको फ़ायदा पहुँचाएगा, लेकिन यही लोग अगर एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करने लगें तो सामूहिक रूप से सबको एक-दूसरे से फ़ायदा पहुँचेगा।

न्याय की माँग

हज़रत मुहम्मद ने एक बार मदीना के एक आदमी से क़र्ज़ लिया। उसके बाद एक दिन वह आया और आपसे क़र्ज़ के भुगतान के लिए कठोर भाषा का प्रयोग किया। पैग़ंबरे-इस्लाम के साथियों ने चाहा कि उसको इस गुस्ताख़ी का दंड दें, लेकिन आपने उन्हें रोक दिया। आपने कहा कि हक़दार को बोलने का हक़ है।

यह दूसरे के साथ रियायत (concession) करने की सीख है। दूसरा आदमी अगर किसी कारणवश ग़ुस्सा में आ जाए या कठोर भाषा का प्रयोग करे तो सुनने वाले को उसके साथ रियायती व्यवहार करना चाहिए। अगर आदमी दूसरे की कठोर बातों को सुनने के लिए तैयार नहीं तो उसको चाहिए कि वह उससे क़र्ज़ जैसा मामला भी न करे। क़र्ज़ लेने के बाद उसको हर स्थिति में क़र्ज़ देने वाले को यह हक़ देना होगा कि वह अपनी भावनाओं को जिस तरह ज़ाहिर करना चाहता है, करे। इस तरह के मामले में क़र्ज़ लेने वाले को सहनशीलता का तरीक़ा अपनाना चाहिए। वह ऐसा नहीं कर सकता कि वह उल्टे रूप से क़र्ज़ देने वाले को सहनशीलता की सीख दे।

अधिकार से ज़्यादा न लेना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "दो आदमी अगर मेरे पास एक ज़मीन का मुक़दमा लेकर आएँ। उनमें से एक आदमी ज़्यादा चालाकी के साथ अगर अपना मुक़दमा पेश करे और उस कारण ज़मीन उसको दे दी जाए, जबकि हक़ीक़त में वह ज़मीन

उसकी न हो तो मानो उसको आग का एक टुकड़ा दिया गया।"

इससे पता चला कि जिस चीज़ पर आदमी का अधिकार न हो, उसके मामले में अगर वह किसी तरीक़े से अपने हक़ में अदालती फ़ैसला ले ले, तब भी वह चीज़ उसकी न होगी। कोई अदालती फ़ैसला हक़ीक़त को नहीं बदल सकता।

हक़ीक़त यह है कि किसी चीज़ पर अनुचित कब्ज़ा हर स्थिति में ग़लत है। अदालत का कोई निर्णय अनुचित को उचित नहीं बना सकता। अगर आदमी की अंतरात्मा यह कहती हो कि अमुक चीज़ मेरी नहीं है तो ऐसी स्थिति में उसके लिए सही तरीक़ा यह है कि वह उस चीज़ को हक़दार के हवाले कर दे, न कि ग़लत तरीक़े से दूसरे की चीज़ पर अधिकार करने की कोशिश करे। अंतरात्मा सबसे बड़ी अदालत है। सबसे बड़ा निर्णय वह है, जो अंतरात्मा की अदालत से जारी किया जाए।

जो अपने लिए, वही दूसरों के लिए

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "मोमिन वह है, जो दूसरों के लिए भी वही पसंद करे, जो वह ख़ुद अपने लिए पसंद करता है।" यह सामाजिक शिष्टाचार का एक बहुत ही व्यापक नियम है। हर आदमी यह जानता है कि दूसरों की ओर से कौन-सा व्यवहार उसे पसंद है और कौन-सा व्यवहार नापसंद। ऐसा ही वह दूसरों के साथ करने लगे। वह दूसरों के साथ वही व्यवहार करे, जो व्यवहार वह अपने लिए चाहता है और दूसरों के साथ उस व्यवहार से बचे, जिसको वह अपने लिए पसंद नहीं करता।

सामाजिक शिष्टाचार का यह नियम इतना साधारण और स्वाभाविक है कि वह हर औरत और हर मर्द को पता है। ज़रूरत केवल यह है कि हर आदमी इस मामले में संवेदनशील (sensitive) हो जाए। जिस संवेदनशीलता का प्रदर्शन वह अपने बारे में करता है, उस संवेदनशीलता का प्रदर्शन वह दूसरों के बारे में करने लगे। लोग अगर इस एक शिष्टाचारी नियम को अपना लें तो पूरा समाज शांति और कल्याण का समाज बन जाए।

आर्थिक दृढ़ता

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ईश्वर जब किसी के लिए रिज़्क़ (sustenance) का एक ज़रिया बनाए तो वह ख़ुद उसे न छोड़े, लेकिन यह कि हालात की मजबूरी के कारण उसे छोड़ना पड़े।" इस्लाम की शिक्षा के अनुसार, रिज़्क़ का संबंध ईश्वर से है, इसलिए जब किसी इंसान को रिज़्क़ का एक माध्यम मिल जाए तो ईश्वर का शुक्र करते हुए वह उस पर जमा रहे। अगर वही किसी वास्तविक कारण के बिना उसको छोड़ेगा तो वह ईश्वर की मदद से वंचित हो जाएगा।

आर्थिक जीवन में सफलता का रहस्य दृढ़ता है। इस हदीस में इसी स्थिरता और दृढ़ता की शिक्षा दी गई है। आर्थिक जीवन में सफलता हमेशा लंबी अवधि तक मेहनत करने के बाद प्राप्त होती है। आदमी को चाहिए कि वह वर्तमान के बजाय भविष्य पर नज़र रखे। इस तरह उसके अंदर दृढ़ता पैदा होगी और वह ज़रूर सफलता की श्रेणी तक पहुँचेगा। यह हदीस इस बात की सीख है कि आर्थिक सक्रियता में भविष्य को देखने का स्वभाव पैदा करो। केवल वर्तमान को देखकर हिम्मत न हारो।

रिज़्क़ ईश्वर की ओर से

क़ुरआन में बताया गया है— "धरती पर जितने भी जीव हैं, हर एक की रोज़ी ईश्वर के ज़िम्मे है।" हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ईश्वर ने किसी मर्द या औरत का जो रिज़्क़ लिख दिया है, कोई उसे छीन नहीं सकता। कोई आदमी न उसमें कमी कर सकता है और न ही बढ़ोतरी।" यह घोषणा हर मर्द और हर औरत को रिज़्क़ की गारंटी दे रही है, जिसे कोई उससे छीनने वाला नहीं। जिस आदमी के दिल में यह बात बैठ जाए, उसे उसके ज़रिये दो फ़ायदे हासिल होंगे— एक ओर उसे यह यक़ीन हासिल होगा कि जो कुछ भी उसे मिल रहा है, वह उसे हर हालत में मिलकर रहेगा। इस यक़ीन की बुनियाद पर वह दुनिया में इस भरोसे के साथ

काम करेगा कि मेरी कोशिशों का फल मुझे ज़रूर मिलने वाला है। कोई भी इतना ताक़तवर नहीं कि वह मेरे और मेरे रिज़्क़ के बीच रुकावट बन सके। रिज़्क़ मेरा एक ऐसा हक़ है, जो ख़ुद दुनिया के मालिक ने मेरे लिए लिख दिया है। फिर कौन है, जो उस लिखे को मिटा सके।

यह यक़ीन आदमी के अंदर से निराशा की भावना को निकाल देता है। वह ठीक समस्याओं के बीच खड़ा होकर कह सकता है— कोई आदमी मेरी एक नौकरी को मुझसे छीन सकता है, लेकिन कोई आदमी इतना ताक़तवर नहीं कि वह मेरी क़िस्मत मुझसे छीन सके।

‘One can take away my job. But no one
has the power to take away my destiny’

संतुष्टि

हज़रत मुहम्मद ने कहा— “वह आदमी सफल हुआ, जिसे ईश्वर ने ज़रूरत के अनुसार रिज़्क़ दिया और वह उस रिज़्क़ पर संतुष्ट रहा।” इससे पता चला कि सफलता का रहस्य मिले हुए पर संतुष्ट रहना है, न कि न मिले हुए के ग़म में पड़े रहना। संसार में जब भी कोई आदमी सही नियम के अनुसार कमाने की कोशिश करे तो वह ज़रूर इतना रिज़्क़ प्राप्त कर लेता है, जो उसकी ज़रूरतों के लिए काफ़ी हो। अगर वह उस मिले हुए पर संतुष्ट हो जाए तो उसका फ़ायदा उसे मानसिक शांति के रूप में मिलेगा, लेकिन शांति हमेशा संतोष से मिलती है और संतोष का मतलब है मिले हुए पर सहमत हो जाना।

इसके विपरीत जो आदमी मिले हुए को कम समझे और न मिले हुए की ओर दौड़ता रहे, वह कभी संतुष्ट नहीं होगा। इसलिए कि दुनिया में चीज़ों की कोई सीमा नहीं। आदमी चाहे कितनी ही चीज़ों को अपने पास जमा कर ले, फिर भी कुछ चीज़ें बाक़ी रहेंगी, जो उसे यह लालच दिलाएँगी कि मुझे यह भी हासिल करना चाहिए। इस तरह वह हमेशा और ज़्यादा के लालच में पड़ा रहेगा। वह इसी तरह अशांत जीवन जिएगा, यहाँ तक कि वह इसी हाल में मर जाएगा।

किसी से न माँगना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "तुम किसी से कुछ न माँगो, क्योंकि नीचे के हाथ की तुलना में ऊपर का हाथ ज़्यादा बेहतर है।" यह उच्च इंसानियत की शिक्षा है। उच्च इंसानियत यह है कि आदमी ख़ुद अपने आप पर भरोसा करे। वह दूसरे से कोई चीज़ न माँगे।

माँगना कोई साधारण बात नहीं। वह आचरणीय गिरावट का एक प्रतीक है। जो आदमी दूसरों से माँगे मानो वह आसान रोज़ी पर जीना चाहता है। इसलिए आदमी को माँगने की आदत की यह क़ीमत देनी पड़ेगी कि उसकी अपनी योग्यता ज़्यादा न उभर सकेगी। उसकी योग्यता उसके अंदर दबी रह जाएगी। उसके अंदर मेहनत की भावना ठंडी पड़ जाएगी। वह उस कमज़ोरी का शिकार हो जाए, जिसको आरामतलबी कहा जाता है। ज़िंदगी का सही तरीक़ा यह है कि आदमी अपने आप पर भरोसा करे। वह अपने आपको मेहनत का आदी बनाए। वह ख़ुद अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करे। वह दूसरों को देने वाला बने, न कि दूसरों से लेने वाला।

व्यापार रोज़गार का बड़ा ज़रिया

हज़रत मुहमद ने कहा— "रोज़गार का नब्बे प्रतिशत हिस्सा व्यापार में है।" इस हदीस में प्रकृति के एक क़ानून को बताया गया है। वह क़ानून यह है कि ईश्वर के बनाए हुए नक़्शे के अनुसार व्यापार में रोज़गार का सबसे बड़ा हिस्सा रखा गया है।

यह हदीस हर आदमी के लिए आशा का भंडार है। किसी आदमी को नौकरी न मिले या वह विरासती अधिकारों को न पाए या दूसरे माध्यमों से वह कुछ पाने की आशा न रखता हो तो उसे व्यापार शुरू कर देना चाहिए। व्यापार के ज़रिये वह इतना ज़्यादा पा लेगा, जो वह दूसरे किसी ज़रिये से नहीं पा सकता था।

मेहनत की रोज़ी

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "ईश्वर अपने उस बंदे से प्रेम करता है, जो मेहनत करके अपनी रोज़ी कमाए।" यह हदीस मेहनत से रोज़ी की अहमियत को बताती है। मेहनत कर के रोज़ी कमाना कोई साधारण बात नहीं। हक़ीक़त यह है कि मेहनत की रोज़ी सारे इंसानी गुणों का मूल स्रोत है। मेहनत की रोज़ी सबसे ज़्यादा सही रोज़ी है। मेहनत से रोज़ी कमाना आदमी को हकीक़तपसंद (realistic) बनाता है। मेहनत की रोज़ी आदमी के अंदर सादगी का स्वभाव पैदा करती है। मेहनत की रोज़ी दूसरों को समझने का अवसर देती है। मेहनत की रोज़ी आदमी को दृढ निश्चयी बनाती है। मेहनत से रोज़ी आदमी को सहूलियतपसंदी से बचाती है। मेहनत से रोज़ी व्यक्तित्व की पूर्णता का महत्वपूर्ण ज़रिया है। अगर मजबूरी न हो, तब भी आदमी को चाहिए कि वह अपने जीवन के लिए मेहनत का तरीक़ा अपनाए, वह हर स्थिति में अपने आपको आरामतलबी से बचाए।

ज़ुबान पर रोक

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "आदमी के झूठा होने के लिए यह काफ़ी होता है कि वह हर सुनी हुई बात को दोहराने लगे।" यह हदीस बातचीत के तरीक़े के एक अहम नियम को बताती है। वह यह कि आदमी को चाहिए कि वह सोचे बिना कभी कुछ न बोले। सामूहिक जीवन में बार-बार ऐसा होता है कि हम दूसरों के ख़िलाफ़ बहुत-सी बातें सुनते हैं। यह अनुभव है कि सुनी हुई बात जब दोहराई जाती है तो वह अक्सर कुछ-से-कुछ हो जाती है, यहाँ तक कि बात इतनी बदल सकती है कि एक सच्ची बात झूठी बात बन जाए। इसलिए केवल सुनने के आधार पर आदमी को उसे कभी दोहराना नहीं चाहिए। अच्छी ख़बर को दोहराने में कोई नुक़सान नहीं, लेकिन अगर बुरी ख़बर हो तो उसे उस समय तक नहीं दोहराना चाहिए, जब तक जाँच-पड़ताल करके पूरी बात पता न कर ली जाए।

चुग़लख़ोरी का प्रायश्चित्त

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "चुग़ली का एक प्रायश्चित (atonement) यह है कि तुम उसके लिए मग़फ़िरत* की दुआ करो, जिसकी तुमने चुग़ली की है।" चुग़ली यह है कि आदमी की अनुपस्थिति में उसकी किसी बुराई की चर्चा की जाए।

चुग़ली एक नुक़सान चाहने का काम है। जब किसी आदमी से चुग़ली की ग़लती हो जाए तो उसको चाहिए कि वह उस आदमी के लिए भलाई चाहने का मामला करे, जिसकी उसने चुग़ली की है और भलाई चाहने का एक रूप यह है कि वह उसके बारे में अच्छी दुआएँ करे। यह चुग़ली करने वाले की ओर से नुक़सान चाहने के बाद भलाई चाहने का एक मामला होगा, जो उसके अपराध को उससे पवित्र कर देगा।

बड़ी सीख

हज़रत मुहम्मद ने अपने एक साथी से कहा— "क्या मैं तुमको एक बड़ी सीख दूँ?" उसने कहा— "हाँ ऐ ईश्वर के पैग़ंबर!" आपने कहा— "तुम अपनी ज़ुबान की हिफ़ाज़त करो।" ज़ुबान की हिफ़ाज़त का मतलब यह है कि आदमी जो कुछ बोले, सोचकर बोले। वह ऐसी बात न कहे, जो दूसरों को सताने वाली हो। ऐसी बात, जिससे समाज में बुराई फैले। उससे वह हर हाल में अपने आपको बचाए। यह एक हक़ीक़त है कि अक्सर सामाजिक बुराइयाँ ज़ुबान की वजह से फैलती हैं। ज़ुबान को क़ाबू में रखना सामाजिक बुराइयों का दरवाज़ा बंद करता है और ज़ुबान पर क़ाबू न करना सामाजिक बुराइयों का दरवाज़ा खोलता है। यह गंभीरता की पहचान है कि आदमी अपनी ज़ुबान का इस्तेमाल हमेशा होशियारी से करे। ज़ुबान का ग़लत इस्तेमाल यह है कि आदमी दूसरों

---

* ईश्वर का किसी को क्षमा करना।

की बुराई करे, वह दूसरों के साथ कठोर बात करे, वह दूसरों की कमियों को ढूँढ़कर उसे लोगों में फैलाए।

सब्र

इस्लाम की एक शिक्षा सब्र (patience and tolerance) है। क़ुरआन में बार-बार सब्र करने पर ज़ोर दिया गया है। क़ुरआन में अक्सर यह कहा गया कि अपने ईश्वर के लिए सब्र करो। इसी तरह कहा कि सब्र करो और तुम्हारा सब्र ईश्वर के लिए है। जब एक आदमी सब्र करता है तो सीधे तौर पर उसका यह सब्र किसी इंसान की तुलना में होता है, लेकिन अपनी हक़ीक़त की दृष्टि से वह ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना (creation plan of God) पर चलने के समानार्थ होता है।

ईश्वर ने संसार की व्यवस्था इस तरह की है कि यहाँ हर एक को आज़ादी हो। यहाँ हर एक के लिए प्रतिद्वंद्विता (competition) का खुला वातावरण हो। इस आधार पर बार-बार ऐसा होता है कि एक को दूसरे से शिकायत पैदा हो जाती है। एक को दूसरे से नुक़सान का अनुभव होता है। ऐसी स्थिति में अप्रिय अनुभव पर सब्र करना जैसे ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना पर सहमत होना है। सब्र की इसी महत्ता के आधार पर ईश्वर ने सब्र को ख़ुद अपने लिए सब्र करने का मामला बताया। क़ुरआन में यह घोषणा की गई है कि जो आदमी सब्र करेगा, उसको बेहिसाब इनाम दिए जाएँगे।

एकपक्षीय सहनशीलता

हज़रत मुहम्मद ने कहा— “जो तुम पर ज़ुल्म करे, उसे माफ़ कर दो।” यह बहुत ही समझदारी की शिक्षा है। ज़ुल्म का समापन ज़ुल्म को माफ़ करके होता है। ज़ुल्म के ख़िलाफ़ जवाबी कार्रवाई करना कभी ज़ुल्म को समाप्त नहीं करता।

हज़रत मुहम्मद का यह कथन दरअसल परिणामजनक काम (result oriented action) की शिक्षा है। अगर कोई आदमी ज़ुल्म की कार्रवाई करे तो

पीड़ित को सबसे पहले यह सोचना चाहिए कि उसकी कार्रवाई ऐसी हो, जो उसके उत्पीड़न (oppression) को समाप्त करे, न कि वह उसके उत्पीड़न को बढ़ा दे। जब भी कोई पीड़ित इस तरह सोचे तो वह पाएगा कि ज़ालिम को माफ़ करना सबसे बड़ा बदला है। ज़ालिम के ज़ुल्म को भुला देना ज़ुल्म को समाप्त करने का सबसे ज़्यादा आसान उपाय है। ज़ालिम को माफ़ करना कोई मजबूरी का काम नहीं, यह एक उच्च नैतिक नियम है। कोई आदमी जब ज़ालिम को माफ़ करे तो उसे बिना मजबूरी के ऐसा करना चाहिए। मजबूरी के तौर पर माफ़ करना भी बेकार है और माफ़ न करना भी बेकार है।

अनदेखी का तरीक़ा

क़ुरआन में आदेश दिया गया है— "बेवक़ूफ़ों और नादानों की अनदेखी करो।" मौजूदा दुनिया में सफल जीवन व्यतीत करने का यह एक बहुत ही अहम नियम है। यह एक हक़ीक़त है कि पेड़-पौधों की दुनिया में जिस तरह फूल के साथ काँटे हैं, उसी तरह इंसानी दुनिया में समझदार लोगों के साथ नादान लोग हर जगह मौजूद हैं। जिस तरह पेड़-पौधों की दुनिया में आदमी काँटों से उलझे बिना फूल को ले लेता है, उसी तरह इंसानी दुनिया में भी उसे नादानों से उलझे बिना अपनी जीवन-यात्रा जारी रखनी है।

नादानों से उलझकर कोई आदमी सफल नहीं हो सकता, इसलिए समझदारी यह है कि जब भी किसी नादान से संपर्क हो तो उसकी अनदेखी करके आदमी आगे बढ़ जाए। कोई आदमी ऐसा नहीं कर सकता कि वह दुनिया से नादानों के वजूद को मिटा दे। अवश्य ही यह हर एक के वश में है कि वह नादानों से उलझे बिना अपना जीवन-निर्माण जारी रखे। नादानों की अनदेखी में यह संदेह नहीं कि वे साहसी हो जाएँगे। अनदेखी आग को बुझाने वाली है, वह आग को भड़काने वाली नहीं।

सब्र में सफलता

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जान लो, सब्र के साथ सफलता है।" इस हदीस में सब्र की असाधारण महत्ता को बताया गया है। इसके अनुसार, सब्र हर तरह की उन्नति की सीढ़ी है। इस दुनिया में सब्र करने वाला कभी असफल नहीं हो सकता। हक़ीक़त यह है कि मौजूदा दुनिया में हर आदमी के साथ उतार-चढ़ाव की घटनाएँ घटती रहती हैं। हर आदमी को बार-बार किसी अप्रिय परिस्थिति का अनुभव होता है। ऐसी हालत में अक्सर ऐसा होता है कि आदमी हिम्मत हार जाता है। वह अपने आपको हारा हुआ महसूस करने लगता है, लेकिन यह सही नहीं। हक़ीक़त यह है कि मौजूदा दुनिया में सफलता की संभावनाएँ इतनी ज़्यादा हैं कि जो कभी समाप्त नहीं होतीं। एक असफलता के बाद हमेशा दूसरी सफलता मौजूद रहती है। सब्र का मक़सद मानो अपना साहस खोए बिना (discouragement) अगले अवसर की प्रतीक्षा करना है। अगर आदमी पहली असफलता के बाद सब्र का सबूत दे तो बहुत जल्द वह पाएगा कि दूसरी सफलता उसके निकट ही उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

छोटी बुराई पर सहमत होना

हज़रत मुहम्मद के एक साथी अमीर इब्ने-हबीब ने कहा— "जो आदमी नादान की छोटी शरारत को सहन नहीं करेगा, उसको नादान की बड़ी शरारत को सहन करना पड़ेगा।"

मौजूदा दुनिया में जिस तरह समझदार लोग हैं, उसी तरह यहाँ नादान लोग भी मौजूद हैं। यह नादान लोग अपनी नादानी के आधार पर दूसरों को कुछ-न-कुछ तकलीफ़ पहुँचाते रहते हैं। यह तकलीफ़ शुरू में एक छोटी तकलीफ़ होती है। समझदारी की माँग है कि इस छोटी तकलीफ़ को सहन कर लिया जाए। जो आदमी छोटी तकलीफ़ पर नादान से उलझ जाए तो नादान ज़िद में आकर उसे और ज़्यादा बड़ी तकलीफ़ पहुँचाएगा। ऐसी स्थिति में सही यह है कि छोटी तकलीफ़ को सहन कर लिया जाए, ताकि बड़ी तकलीफ़ का सामना न करना पड़े।

सहनशीलता के द्वारा रक्षा

हज़रत मुहम्मद के मशहूर साथी अब्दुल्ला इब्ने-अब्बास ने कहा— "अज्ञानता करने वाले की अज्ञानता से रक्षा तुम सहनशीलता (tolerance) के द्वारा करो।" हज़रत अब्दुल्ला के कथनानुसार, रक्षा का एक सही तरीक़ा यह भी है कि उसके लिए जवाबी कारर्वाई का तरीक़ा न अपनाया जाए।

दुनिया में बार-बार ऐसा होता है कि आदमी का संपर्क नादानों से हो जाता है। ऐसे नादानों की बुराई से बचने का सबसे ज़्यादा कारगर तरीक़ा सहनशीलता का तरीक़ा है। सहनशीलता का तरीक़ा नादानों की कार्रवाई को पहले ही चरण में रोक देता है। इसके विपरीत अगर नादानों की तुलना में प्रतिक्रिया (reaction) का तरीक़ा अपनाया जाए तो उनकी बुराई बढ़ती रहेगी, यहाँ तक कि वह क़ाबू के बाहर हो जाएगी।

ग़ुस्सा नहीं

एक आदमी हज़रत मुहम्मद के पास आया। उसने कहा— "ऐ ईश्वर के पैग़ंबर, मुझे कोई ऐसी सीख दीजिए, जो मेरी पूरी ज़िंदगी को सुधारने का ज़रिया बन जाए।" आपने कहा— "तुम ग़ुस्सा न करो।" यह बेशक एक बड़ी महत्वपूर्ण सीख है। यह एक ऐसा नियम है, जिसको अगर आदमी अपना ले तो उसकी ज़िंदगी के सारे मामले ठीक हो जाएँ।

असल यह है कि इंसान हमेशा एक समाज के अंदर रहता है। उसे बार-बार ऐसे अप्रिय अनुभवों का सामना करना पड़ता है, जो उसको भड़का दें और उसके अंदर ग़ुस्सा पैदा कर दें और फिर जब आदमी ग़ुस्से में आ जाए तो उसके बाद यह होता है कि उसके अंदर नफ़रत और बदले की आग भड़क उठती है। वह ग़ुस्सा दिलाने वाले के ख़िलाफ़ बदले की कार्रवाई करता है और फिर हर बदला दोबारा एक नए बदले को भड़काता है। इस तरह बदले-पर-बदले का सिलसिला चल पड़ता है, जो तबाही के सिवा और कहीं नहीं पहुँचाता। ऐसी स्थिति में

अपनी जीवन-यात्रा को सफलता के साथ जारी रखने के लिए ज़रूरी है कि आदमी ग़ुस्से जैसी भावना से अपने आपको ऊपर उठाए। वह नकारात्मक परिस्थितियों का सकारात्मक तरीक़े से जवाब दे।

ग़ुस्से का हल

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "जब किसी आदमी को ग़ुस्सा आए तो अगर वह खड़ा है तो बैठ जाए। अगर वह बोल रहा है तो चुप हो जाए।" इसका मतलब यह है कि आदमी जिस हालत में है, वह उस हालत को बदल दे। हालत का यह बदलाव उसके लिए ग़ुस्से को ख़त्म करने का कारण बन जाएगा।

ग़ुस्सा एक आग है, जो किसी नापसंद बात पर आदमी के अंदर भड़कता है। ग़ुस्सा आदमी को तबाही वाले तरीक़े की ओर ले जाता है। वह हमेशा नुक़सान पहुँचाने वाला होता है। ऐसी हालत में समझदारी यह है कि ग़ुस्सा आते ही तुरंत उसे ठंडा करने का उपाय किया जाए। उपाय के द्वारा आदमी ग़ुस्से को मिनटों में ख़त्म कर सकता है, लेकिन अगर ग़ुस्से को जारी रहने दिया जाए तो वह आदमी को ऐसा नुक़सान पहुँचाता है, जिसकी पूर्ति फिर कभी संभव न हो। ग़ुस्से का आना एक स्वाभाविक बात है। ग़ुस्सा आना ख़ुद अपने आपमें बुरा नहीं, बुरी बात यह है कि आदमी अपने ग़ुस्से पर क़ाबू न कर सके। ग़ुस्से पर क़ाबू न कर सकना ख़ुद अपने आपसे हार जाना है और अपने आपसे हार जाना बेशक सबसे ज़्यादा बुरी हार है।

शैतान से पनाह माँगना

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "शैतान* तुम्हारा दुश्मन है। जब भी तुम्हें महसूस हो कि शैतान तुम्हें बहका रहा है तो तुम कहो, 'ऐ ईश्वर! मैं शैतान के बहकावों के मुक़ाबले में तुझसे पनाह माँगता हूँ।' "

---

* ईश्वर की आज्ञा न मानने वाला उपद्रवी, जिसे ईश्वर ने बहिष्कृत किया, जो इंसानों को गुमराह करता है।

शैतान इंसान का दुश्मन है। वह चाहता है कि इंसान को सही रास्ते से भटकाए। वह अलग-अलग तरह के संदेह (doubts) डालकर इंसान को सच्चाई से हटाने की कोशिश करता है। शैतान आदमी को दिखाई नहीं देता। वह छिपकर इंसान के ऊपर हमला करता है। इंसान इस शैतानी हमले के मुक़ाबले में बिल्कुल लाचार है। इससे बचने का एक ही रास्ता है और वह है ईश्वर से मदद माँगना। ईश्वर का वादा है कि जब भी कोई आदमी शैतान के मुक़ाबले में ईश्वर से पनाह माँगेगा, वह ज़रूर उसको अपनी पनाह देगा। यही इस समस्या का एकमात्र हल है।

शक्तिशाली कौन?

हज़रत मुहम्मद ने कहा— "पहलवान वह नहीं है, जो लोगों को कुश्ती में पछाड़ दे; बल्कि पहलवान वह है, जो ग़ुस्से के वक़्त अपने आपको क़ाबू में रखे।" यह बेशक किसी आदमी के ताक़तवर होने का सबसे ऊँचा मापदंड है। शारीरिक मुक़ाबले में किसी को पछाड़ना कोई बड़ा कारनामा नहीं, ऐसा कारनामा तो एक हैवान भी कर सकता है। किसी इंसान के ताक़तवर होने की सबसे बड़ी पहचान यह है कि जब उसे किसी पर ग़ुस्सा आए तो वह अपने आपको पूरी तरह से क़ाबू में रखे। ग़ुस्से के बाद भी वह इंसानियत के दायरे से बाहर न जाए। वह ग़ुस्से पर हावी रहे, न कि ग़ुस्सा उस पर हावी हो जाए।

कठिनाई में आसानी

क़ुरआन में क़ुदरत के जिन क़ानूनों को बताया गया है, उनमें से एक क़ानून यह है कि इस संसार में कठिनाई से साथ आसानी रखी गई है यानी कठिनाई के बाद नहीं, बल्कि स्वयं कठिनाई के साथ ही आसानी का पहलू शामिल है। यह प्रकृति का एक स्थायी (eternal) क़ानून है। वह कभी बदलने वाला नहीं।

असल यह है कि इस संसार में कठिनाई की तुलना में संभावनाओं की मात्रा बहुत ज़्यादा है। अगर एक कठिनाई पैदा हो या एक बार कोई नुक़सान हो जाए

तो आदमी को निराश नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे चाहिए कि वह अपनी सोचने की योग्यता का प्रयोग करे। जब वह सोचेगा तो वह जानेगा कि ठीक उसी समय और ठीक उसी जगह पर उसके लिए बहुत-सी नई संभावनाएँ मौजूद हैं। वह एक अवसर को खोकर दूसरा अवसर पा सकता है, जिसको प्रयोग करके वह दोबारा आगे बढ़ जाए।

मौजूदा दुनिया में ज़िंदगी का सबसे बढ़िया फॉर्मूला यह है कि समस्याओं की अनदेखी करो और अवसरों का प्रयोग करो।

'Ignore the problems, avail the opportunity'

प्रतिकूल परिस्थितियों को अच्छे उपाय से अपने अनुकूल बनाने की कोशिश करो। असफलता को ज़्यादा सही योजनाबंदी के द्वारा सफलता में परिवर्तित करो।

ईश्वर के इस संसार में यह संभव है कि आदमी अपनी बुद्धि का प्रयोग करके अपने 'माइनस' को 'प्लस'बना सके। यह संभावना हर उस आदमी के लिए मौजूद है, जो हिम्मत न हारे, जो निराशा की परिस्थितियों में भी आशावान बना रहे।

आसान तरीक़े का चुनाव

हज़रत मुहम्मद की पत्नी हज़रत आयशा पैग़ंबर की सामान्य पॉलिसी को बताते हुए कहती हैं— "जब भी हज़रत मुहम्मद को दो में से एक का चुनाव करना होता तो आप कठिन चुनाव को छोड़ देते और आसान चुनाव को ले लेते।"

इसका मतलब यह है कि जब आपको हिंसात्मक तरीक़े और शांतिपूर्ण तरीक़े के बीच चुनाव करना होता तो आप हिंसात्मक तरीक़े को छोड़ देते और शांतिपूर्ण तरीक़े को अपनाते। इस तरह जब भी आपको अनदेखी और टकराव के बीच चुनाव करना होता तो आप हमेशा टकराव के तरीक़े को छोड़ देते और अनदेखी के तरीक़े को अपनाते। इसी तरह जब आपको युद्ध और समझौते के

बीच चुनाव करना होता तो आप हमेशा युद्ध को छोड़ देते और समझौते को स्वीकार कर लेते।

यही समझदारी है। इस समझदारी का फ़ायदा यह है कि आदमी किसी बड़े बिगाड़ से बच जाए और अपने मामलों को सफलता के साथ ठीक करता चला जाए। हर मामले में हमेशा दोनों तरीक़ों की संभावना होती है, लेकिन समझदारी वही है जिसका नमूना पैग़ंबरे-इस्लाम की ज़िंदगी में हमें मिलता है।

अरुचि में भलाई

क़ुरआन में एक अवसर पर सीख देते हुए कहा गया है— “हो सकता है तुम एक चीज़ को पसंद न करो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो और हो सकता है कि तुम एक चीज़ को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो।”

इस आयत का संबंध ज़िंदगी के सभी मामलों से है। लोग आम तौर पर चीजों को ज़ाहिर की दृष्टि से देखते हैं। वे ज़ाहिरी दिलकशी के आधार पर एक चीज़ को पसंद करने लगते हैं और जो चीज़ ज़ाहिर की दृष्टि से दिलकश न हो, उसको नापसंदीदा समझकर रद्द कर देते हैं, लेकिन वास्तविक परिणाम की दृष्टि से यह तरीक़ा सही नहीं।

अक्सर ऐसा होता है कि एक चीज़ बज़ाहिर देखने में अच्छी नहीं लगती, लेकिन वास्तविक दृष्टि से इंसान के लिए उसी में फ़ायदा छुपा हुआ होता है। इसके विपरीत एक चीज़ बज़ाहिर देखने में अच्छी लगती है, लेकिन वास्तविक दृष्टि से वह बुरे अंजाम की ओर ले जाने वाली होती है। ऐसी स्थिति में आदमी को चाहिए कि वह ज़ाहिर की दृष्टि से चीज़ों के बारे में निर्णय न करे, बल्कि वह गहरी हक़ीक़तों की दृष्टि से चीज़ों को देखे और उसके अनुसार निर्णय करे।

एक दुआ

हज़रत मुहम्मद की एक दुआ इन शब्दों में है— "ऐ ईश्वर! मुझे सच को सच के रूप में दिखा और मुझे उस पर चलने की तौफ़ीक* दे और मुझे झूठ को झूठ के रूप में दिखा और मुझे उससे बचने की तौफ़ीक दे और मुझे चीज़ों को वैसा ही दिखा, जैसा कि वह हैं।"

मौजूदा दुनिया में सबसे ज़्यादा ज़रूरी चीज़ यह है कि आदमी के अंदर तथ्यों पर आधारित सोच (objective thinking) हो। इस हदीस में इसी के लिए दुआ की शिक्षा दी गई है। मौजूदा दुनिया में आदमी ऐसी परिस्थितियों के बीच रहता है कि वह अक्सर सच को झूठ के रूप में देखने लगता है और झूठ को सच के रूप में। इस दुआ में बंदा अपने रब से सवाल कर रहा है कि वह उसे गुमराही से बचाए। वह उसके अंदर वह दृष्टि पैदा करे, जो चीज़ों को उनके वास्तविक (as it is) रूप में देखने लगे। सही सोच से सही काम पैदा होता है और सही काम आदमी को हमेशा सफलता की ओर ले जाता है।

इस पैग़ंबराना दुआ के अनुसार, हर इंसान इस वैचारिक समस्या से परेशान है कि सच उसे सच के रूप में नहीं दिखाई देता है और झूठ उसे झूठ के रूप में नहीं दिखाई देता है। यह समस्या कंडीशनिंग (conditioning) के कारण पैदा होती है। हर आदमी जन्म के बाद एक वातावरण में पलता-बढ़ता है। प्रारंभिक आयु में वह बौद्धिक अपरिपक्वता (intellectual immaturity) के आधार पर वातावरण के प्रभाव को स्वीकार करता है, इसी का नाम कंडीशनिंग है। परिपक्वतता (maturity) की आयु को पहुँचने के बाद हर इंसान को यह करना है कि वह अपने विवेक को जागरूक करके अपनी कंडीशनिंग की डी-कंडीशनिंग करे। वह अपने आपको घटनानुसार सोच (as it is thinking) के दर्जे तक पहुँचाए। ज्ञान का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वह आदमी को समझदार बनाकर उसको इस सेल्फ़ डी-कंडीशनिंग के लिए तैयार करे। यह दुआ इसी डी-कंडीशनिंग के काम में विश्वास को और बढ़ाती है।

---

* मार्गदर्शन, प्रेरणा और हिम्मत।

सफल जीवन के सैद्धांतिक नियम

ईश्वर की पहचान ज्ञान के बिना नहीं हो सकती, इसलिए ज्ञान प्राप्त करने को अनिवार्य किया गया है। ज्ञान इंसान की समझ को बढ़ाता है। ज्ञान से इंसान के ज़हन की खिड़कियाँ खुलती हैं। ज्ञान से सोच का दायरा बढ़ता है। ज्ञान के द्वारा इंसान इस योग्य हो जाता है कि वह ज़्यादा गहरी हक़ीक़तों को समझ सके, वह दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाकर अपना बौद्धिक विकास (intellectual development) कर सके।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान 'सेंटर फॉर पीस एंड स्प्रिचुएलिटी', नई दिल्ली के संस्थापक हैं। मौलाना का मानना है कि शांति और आध्यात्मिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं : आध्यात्मिकता शांति की आंतरिक संतुष्टि है और शांति आध्यात्मिकता की बाहरी अभिव्यक्ति। विश्व-शांति में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त है।

ISBN 978-93-86589-25-5

₹40.00

CPS International
centre for peace & spirituality
www.cpsglobal.org

www.goodwordbooks.com